उदय नारायण सिंह
'नचिकेता'

प्रत्यावर्त्तन

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

प्रकाशक :
मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड
१६२/ए/१३२, लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता-७०० ०४५

प्रथम संस्करण :
१९७६ ई०

प्रकाशक :
मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड
१६२/ए/१३२, लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता-७०० ०४५

वितरक :
मैथिली रंगमंच
१६२/ए/८५, लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता-७०० ०४५

आवरण :
उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

मुद्रक :
सिंह प्रेस
कलकत्ता-७०० ०४५

मूल्य :
तीन टाका

नाट्यकारक वक्तव्य

'प्रत्यावर्त्तन' हमर षष्ठ पूर्णांग नाटक थिक। एकर पहिलुका नाटक सब मे सँ 'आन्दोलन' (१९७३) आ' 'रामलीला' (१९७४) कें छोड़ि कए बाकी नाटक सब ('नायकक नाम जीवन', 'एक छल राजा', 'नाटकक लेल') प्रकाशित आ' अभिनीत भेल अछि। एहि नाटक क नामकरण कैक दृष्टियें सार्थक अछि। स्वप्नकल्पित अप्राप्य आदर्शक पश्चाद्धावन कें छोड़ि नायक मानव घुरि ऐलाह कठोर वास्तव मे। एम्हर दू वर्ष सँ चारिटा एकांकी ('जनक', 'ओ कागज केर बाघ छथि', 'इन्द्रमा', आ' 'प्रयोग') रचनाक बाद हम घुरि ऐलहुँ पुनः पूर्णांग नाट्यरचनाक क्षेत्र मे। तकर अलावा, एकर पहिलुका नाटक सब मे दृश्य-सज्जा, दृश्यविभाजन, आलोकसम्पात आ' कथाविन्यास क क्षेत्र मे जे निरीक्षण आदि कैने जाइत छलहुँ, एहि नाटक क रचना करैत काल से सबटा कें दूर हँटाए हम पुनः प्राचीन रीति क व्यवहार मे घुरि ऐलहुँ। देखै चाहैत छलहुँ, पुरनका तकनीक क व्यवहार करैत एकटा नव कथा कें सार्थक रूपें कहल जा सकैत अछि वा नहि। भाषाक अति द्रुत एकरूपीकरण (Standardization) क नारा मे गला मिला कए हम सब जाहि तरहें दड़िभंगा-शैलीक व्यवहार कें जनप्रिय बनैबाक प्रयास करैत आबि रहल छी (तकरा हम बेजाय काज करब नहि कहै चाहैत छी)— एहि नाटकक कथाक परिवेश कें देखैत हम वार्त्ता-रचना मे— ताहि सँ हँटि कए आंचलिक उपभाषाक व्यवहार कैने छी। एतय सहरसाक उपभाषाक जे लेख्यरूप हम देने छी, सहरसाक अधिकांश मैथिल साहित्यकार-बन्धु भरिसक ताहि सँ सहमत हैताह। नाटकक नायक दड़िभंगाक छथि; तैं ओ आन तरहें बजैत छथि। एहि नाटकक अभिनयक लेल समुन्नत मंच व्यवस्थाक प्रयोजन नहि हैत। ई कत्तहु खेलायल जा सकैत अछि। और तैं, एहि नाटक क रचना करैत काल हम सदिखन ई बात ध्यान मे राखलहुँ जे एकर रचना एहि प्रकारें होइक, जाहि सँ एकर निर्देशक कें आपन प्रतिभाक प्रदर्शनक पूर्ण स्वाधीनता भेंटन्हि। आशा अछि, एकर पाठक, दर्शक, निर्देशक, अभिनेता आ' आलोचक लोकनि एकर दोष-गुण क विषय मे आपन अभिमत प्रकट कए हमर नाट्यरचनाक मानोन्नयन मे सहायता करताह।

—उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

पात्र-परिचय

मानव—आदर्शवादी डाक्टर।

प्रवीण—चिरागबस्ती गामक एक वृद्ध अन्ध व्यक्ति।

नारद—गामक एक वयस्क व्यक्ति, प्रवीणक भैयारी मे सँ।

मारीच—गामक अर्धशिक्षित वैद्य।

राजा सेठ—गामक सब सँ धनिक महाजन।

बुचकुन—प्रवीणक खबास।

करुणा—प्रवीणक विधवा पुत्रवधू।

कौशल्या—गामक वयस्का विधवा महिला।

पहिल गौंआ, दोसर गौंआ, आ' अन्यान्य व्यक्ति।

दृश्यपट

(क) प्रवीणक दुआरि—दुआरिक सामने गामक रास्ता देखल जाइछ। दुआरि पर दू टा कुर्सी, एकटा टंगटुट्टा टेबुल आ' एकटा बेंच राखल रहैत अछि।

(ख) प्रवीणक आंगन—भनसाघर देखल जाइछ, दू-एकटा कुर्सी आ' ओसरा पर एकटा पिढ़िया रहैत अछि।

(ग) मारीच वैद्यक दुआरि—एकटा चौकी, एकटा दवायक ताखा आ दू-एकटा कुर्सी देखल जाइत अछि।

(घ) राजा सेठक विश्रामागार—चौकी, कैकटा मसलन, सफेद बिछौनाक-चादर, गड़गड़ा आ' दूटा कुर्सी देखल जाइत अछि।

—:०:—

पहिल दृश्य

[मंच तावत् आलोकित नहि भेल अछि। अन्हार मे मानवक स्वगतोक्ति सुनल जाइछ।]

मानव—[स्वगत] हम छी मानव—और ई शहर थिक दुनियाक सब सँ पैघ शहर मे सँ एक। हम डाक्टर छी और ई शहर थिक मरीज़—रोगी। मुदा हमरा सन सन लाखो डाक्टर मिलियहु कए एहि रोगीक चिकित्सा नहि क' सकैत अछि। मुदा ई नहि जे एहि रोगक लछ्छन स्पष्ट नहि होइछ। से सब अत्यन्त स्पष्ट अछि। एहि शहर मे लोग अर्थ कें छोड़ि आर किछुओ नहि चिन्हैत अछि—प्रेम, त्याग, दया, ममता आदि मानवीय गुण एतहुका मनुष्य मे नहि अछि। और एहि दूषित स्थानहि सँ जन्म ल' रहल अछि रुग्ण कविता, निष्प्राण संगीत, नकली शिल्प। एतय सब क्यो आन लोग कें सन्देहक दृष्टियें देखैत अछि। रास्ताक मोड़ पर नमहर तालिका टांगल रहैत अछि—कखन, कतय, कोना आ कतेक

हँसब, कानब, आनन्दित हैब वा लड़ब-झगड़ब उचित हैत। [मुहूर्त्तक स्तब्धता] एत्तेक दिन बाध्य भ' कए एतय रहै पड़ल अछि। एखन हमरा ने कोनो बन्धन अछि, ने एहि शहर सँ प्रयोजन। एहि संसार मे एक बाबूये छैने रहथि हमरा जनमे सँ, आब ओहो नहि रहलाह। एतबा दिन डाक्टरी पढ़बाक लेल एतय रहब जरूरी छल। आब डाक्टरी पास कैलहुँ अछि—भेटल अछि स्वाधीन चिकित्सा क अधिकार। तैं एहि शहर क प्रयोजन शेष भेल अछि। [स्तब्धता] और चिकित्सा क स्वाधीनता भेंटलाक बादे नजरि पड़ल सब सँ कठिन रोगक दिसि, एहि शहरक रोग। और किछु दिन रहि कए बुझलहुँ—एहि रोगी क चिकित्सा नहि भ' सकैत अछि। जकर प्राणे नहि छैक, ने हृदय छैक, तकरा बचाओल कोना जा सकैत अछि! अहुना एहि मुर्दा शहर मे रहि कए चिकित्सक क रूप मे प्रतिष्ठा पैबाक लेल जाहि वस्तुक प्रयोजन छैक, से हमरा नहि अछि और से थिक—टाका। तैं—आब समय आयल अछि एहि शहर कें जवाब द' कए, एकटा आसन्न मृत्युक हाथ मे सौंपि कए एतय सँ चलि देबाक। [चुप्पी] नेनहि सँ बाबूक मुँहें गामक गप्प सुनैत छलहुँ। गामक सुन्दर दृश्य—पोखरि, खेत-पथार, नीपल पोतल आङन, बैलगाड़ी पर चढ़ल लजाइत कनियाँ, गामक सरल लोग आ तकरा सभक जीवन हमरा नेनहि सँ आकृष्ट कैने छल। ओतहुका जीवन मे एखनहु प्राण अछि। एहि मृतप्राय शहर कें जखन छोड़हि पड़त, तखन—

[रेलगाड़ीक चलबाक शब्द धीरें धीरें तीव्र भए मिझा जाइत अछि। गाड़ी कोनो स्टेशन पर रुकैत अछि। किछु कोलाहल सुनल जाइछ। लोग उतरैत-चढ़ैत अछि। गाड़ी पुनः चलि जाइछ। नेपथ्य सँ दू व्यक्तिक कथोपकथन सुनल जाइछ—एहि मे द्वितीय व्यक्ति छथि मानव।]

प्रथम—अपने कतय जायब ?

द्वितीय—एँ ? हमरा पूछैत छी ?

प्रथम—नहि त और ककरा सँ पूछब ? और सब गोटे त चलिये गेलखिन यै।

एक अहीं—लागै छै, शहर सँ आयल छी।

द्वितीय—जी हँ।

प्रथम—हम एहि छोटछीन स्टेशन क स्टेशन मास्टर छी—अपने......

द्वितीय—हमर नाम मानव थीक।

प्रथम—कोन गाम जायब ? कही त हम बैलगाड़ी क इन्तजाम कै दी। बुझाइत अछि—एहि दिस नये आयल छी।

द्वितीय—जी हँ। पहिले बेर ऐलहुँ।

प्रथम—कतय जायब ?

द्वितीय—से ठीक नहि कैलहुँ अछि। अहाँ त पुरान लोग छी। एम्हर आस-पास क गाम क नाम सब त जनितहि हैब......।

प्रथम—आसपास कोनो एक-दूटा गाम छै थोड़बे ?

द्वितीय—तैयहु—

प्रथम—पहाड़पुर, बिराटपुर, बराही, कासनगर, चिराग बस्ती......

द्वितीय—चिराग बस्ती ! ई चिराग बस्ती कत्तेक दूर अछि एतय सँ ?

प्रथम—दस कोस। बैल गाड़ी सँ जाय सकैछी। लेकिन सेहो एक कोस एम्हरे उतारि देत—मैना घाट लग।

द्वितीय—आ तकर बाद ?

प्रथम—नाव पर घाट के ओहि पार जाउ आ पैदल चलू !

द्वितीय—कत्तेक दूर ?

प्रथम—ओतय सँ बेसी दूर नहि, कोस भरि चलै पड़त।

[धीरे धीरे मंचक आलोक स्तिमित भ' कए मिझा जाइत अछि और एकटा गड़ीमानक दुनू बरद क प्रति गारि आदि सुनल जाइछ। गाड़ी चलैत अछि। गड़ीमान एकटा लोकगीत गाबै लगैत अछि। धीरे-धीरे लोकगीत क स्वर विलीन भ' जाइत अछि। कनेक देरक बाद किछु पक्षीक स्वर सुनना जाइछ—एकटा कुकुर क भूकब स्पष्ट भ' उठैत अछि। मंच धीरे-धीरे आलोकित भ' उठैत अछि। प्रवीण बाबू क दुआरि। प्रवीण

बाबू सुतल छथि—बेरियाक पहर।]

बुचकुन—[प्रविष्ट भए] मालिक, यौ मालिक! उठियौ ने! [धीरे-धीरे प्रवीण कें धक्का दैत अछि।]

प्रवीण—[नींद सँ जागैत] की भेलौ ? बाढ़ि आबि गेलौ कि घर मे आगि लगैलकौ कोइ ?

बुचकुन—[निम्न स्वरें] मालिक आइ खिसिआयल छथिन।

प्रवीण—खिसिआयब नइ त की ?

बुचकुन—[जीह दाँत तर दाबैत] जाः, सुनि लेने छथिन हमर बात। आश्चर्य !

प्रवीण—त एहि मे अचरजक कोन बात! [उठैत] आन्हरे ने छी, बहिरा त नइ ने!

बुचकुन—[प्रवीण कें हुनक लाठी धरा दैत अछि। हुनका कुर्सी पर बैसा कए] बैठू एत्ते! हम पानि आनै छी हाथ-मुँह धोइबा लेल।

प्रवीण—हरिओम! हरिओम!! [किछु काल चुप्प रहैत छथि] की भेलौ रै ? मरि गेलहीं कि जीविते छें ?

[एतबा मे रास्ता सँ मानव चलैत देखल जाइत छथि। ओ चलैत चलैत प्रवीण बाबू क दुआरि दिसि देखैत छथि। प्रवीण बाबू कें रास्ता क दिसि देखैत देखि ओ हुनका दिसि अगुआ जाइत छथि। ओ हुनक पास आबि कए ठाढ़ होइत छथि। मुदा प्रवीण बाबू क मुख पर परिवर्त्तन क रेखा नहि देखि विस्मित भए गला खखारैत छथि।]

गला कियैक खखारैत छें रौ ? हम तोहर भैंसुर लागबौ की ?

मानव—[अकचका कए] माने......!

[तावत् बुचकुन दोल मे पानि भरने आबैत अछि। ओ मानव कें देखि विस्मित होइत अछि। मानवक शहरी पोषाक क दिसि देखतहि रहि जाइत अछि।]

प्रवीण—[वालटी क शब्द सुनलन्हि; मुदा बुचकुन कें निरुत्तर पाबि---] आइ की भेलौ रे बुचकुन ?

बुचकुन—[ध्यान भंग होइत अछि] जी मालिक ?

प्रवीण—जी मालिक के बच्चा, बोलै कियैक नइ छें ? पानि अनलिहीं ?

बुचकुन—हे इयेह ! [पानि रखैत प्रवीण कें उठा कए एक कात ल' जाइत छथि—बालटी कें छुआ दैत छथि। प्रवीण बालटी सँ ढारि कए हाथ मुँह धोइत छथि। मानव बुझैत छथि जे प्रवीण आन्हर छथि। बुचकुन प्रवीण कें पुनः ल' अबैत छथि हुनक कुर्सी लग। हुनका बैसा कए इङ्गित द्वारा मानव कें कहैत छथि जे प्रवीण आन्हर छथि; मानव माथ डोलाबैत छथि।]

बुचकुन—मालिक !

प्रवीण—की छियै ?

बुचकुन—एक गोटे आयल छथि।

प्रवीण—के छियै ई एक गोटे ? नाम नहि कहि हैछो ?

बुचकुन—जानतिहै, तखैन ने कहतिहै !

मानव—जी; हमर नाम थिक मानव।

प्रवीण—मानव ? एहि नाम के त......

मानव—हम आस पासक गाम सँ नहि—बहुत दूर सँ आयल छी।

प्रवीण—कत्तै सँ ? आ जाय कत्ते रहल छी ?

मानव—हम कलकत्ता सँ आबि रहल छी।

प्रवीण—कलकत्ता ! एमहर कोन गाम जायब ?

मानव—चिराग बस्ती त भरिसक......

बुचकुन—चिराग बस्ती त इयेहे गाम क नाम......

प्रवीण—तों चुप रह ! [मानव सँ] हँ, त अहाँ ककरा ओत्ते जेबै ?

मानव—से......माने......

बुचकुन—राजा सेठ क घर जेबै की ?

मानव—राजा सेठ ? [किछु कालक चुप्पी] नहि, ...हम ठीक नहि कैने छी—माने कोनो ठीक नहि अछि—कतय ठहरब !

प्रवीण—तकर अर्थ ? अहाँ रहनिहार कतौका भेलौं ?

मानव—कलकत्ते क। नेनहि सँ ओत्तहि रहलहुँ। मुदा हमर जन्म ओतय नहि भेल छल। हमर बाबू दरभंगा जिला क दुखहरणपुर क रहनिहार छलाह। हमर जन्म......

प्रवीण—हुनक नाम की छिकैन ?

मानव—सुखमय मल्लिक !

प्रवीण—ओ ! अहाँ कायस्थ छी ?

मानव—हमरा लेल ओहि शब्द क कोनो अर्थ नहि अछि।

प्रवीण—कियै ? जाति नइ माने छी ?

मानव—मानने कोन लाभ ! एकटा झूठमूठ क फराक......एहि जाति और ओहि जाति मे......!!

प्रवीण—हुँ ! बुचकुन !

बुचकुन—जी मालिक ?

प्रवीण—हमर हुक्का नेने आ त !

बुचकुन—इयेह आनलौं। [बुचकुन क प्रस्थान]

प्रवीण—हँ......कि ने कहै छलौं ? जाति नहि माने छी ! बेस ! लेकिन ई त बताउ—एक बायग दरभंगा सँ ई सहरसा जिला केना पहुँचलौं ?

मानव—हमरा सँ जँ पूछी—चिराग बस्ती मे कियैक ऐलौं, त एतबे कहि सकैत छी जे स्टेशन मास्टर क मुँहें आसपास क कैकटा गाम क नाम सुनैत सुनैत इयेह नाम हमरा सब सँ नीक लागल—चिराग !

प्रवीण—नहि बुझलौं ! अहाँ कहै चाहै छी जे आन कोनो गाम क नाम नीक लागतिहै त ओत्तहि जैतिहौं ?

मानव—भरिसक !

[तावत् बुचकुन हुक्का ल' कए प्रविष्ट होइत अछि।]

बुचकुन—हे लियह मालिक !

प्रवीण—[बुचकुन सँ किछु बिनु कहनहि हुक्का लैत छथि और ताहि मे मुँह लगबैत कहैत छथि—] आश्चर्य !

बुचकुन—से कियैक ? पानि ठीक नहि भेल छै की ?

प्रवीण—नहि हम तोरा नहि......हिनका कहैत छियैन ! [किछुकाल चुप रहि कए] टीसन सै एत्ते ऐलौं केना ?

मानव—मैना घाट धरि बैल गाड़ी सँ, आ तकर बाद पैदल......

प्रवीण—एखैन त साँझ क देर नहि छै......राति कें ठहरब कत्तै ?

[तावत् किछु लोग क स्वर सुनबा मे अबैछ ।]

नारद—[नेपथ्य सँ] भाइ छे हौ ?

प्रवीण—[उच्च स्वरें] के छिये ? आब' आब' !

[तीन गोट ग्रामवासी प्रविष्ट होइत छथि ।]

आबै जा ! [सभक उपविष्ट भेलाक बाद, हुक्का मे मुँह लगा कए] की खबर छह ? नव कोनो......

नारद—और की खबर हैतै ? तखैन हँ......आइ बुधवा टिसन गेल रहै। ओतय सै अखबार कीनने अयलै......हम सब गोटे सैह पढ़ै रहौं !

प्रवीण—[हुक्का सँ मुँह हटा कए] की कहै छै अखबार ?

नारद—कहै त अलाय-बलाय बहुत कुछ छै। लेकिन एकटा भारी खबर छै...

प्रवीण—से की ?

नारद—कलकत्ता मे कोनो रवीन्द्र सरोवर छै......

पहिल गौंआ—ओत्ते भारी अनर्थ भै गेलै।

दोसर गौंआ—इयैह चारि-पाँच दिन भेलै......

नारद—की कहिय' ? सुनै छी कोनो फंसन रहै ! हजार क हजार लोग आयल रहै। गुण्डा सब मारि कै देलकै......कत्ते लोग के रुपैया-पैसा-घड़ी, जनानी के गहना...सबटा स्वाहा ताही मे......

पहिल गौंआ—खाली सैह नहि।

दोसर गौंआ—कत्तेको जनानी क इज्जति...[चुप भ' जाइत छथि ।]

प्रवीण—मानव बाबू !

मानव—[एतवा देर धरि ई सब सुनैत सुनैत मानव उदास भ' गेल रहथि।

चौंकैत] जी !

प्रवीण—अहाँ कहिया चललौं कलकत्ता सै ?

मानव—इयैह परसूखनि।

प्रवीण—ई सबटा खबरि ठीके छियै कि......

मानव—ओसब जत्तेक कहलन्हि, सरिपहुँ ताहि सँ बेसीए भेल छल—कम नहि !

नारद—हिनका नहि चिन्हलियैन भाइ !

प्रवीण—ई भेलखिन मानव मल्लिक......गाम भेलैन दरभंगा क दुखहरणपुर।
लेकिन होश जहिया सँ भेलैन, तहिया सँ कलकत्ते मे रहलैन......

नारद—ओ ! त एम्हर क़ने आयल छथिन ? किनका ओत्ते ?

पहिल गौंआ—एहि गाम मे त कोई कायस्थ......

मानव—कियैक ? एक आदमी दोसर आदमी क पास नहि जा सकैत अछि ?

दोसर गौंआ—जाय त सकै छै ! लेकिन अपने कतय जैबै ?

मानव—से ठीक नहि कैलहुँ एखन धरि।

नारद—अपने ऐलौं कियै ? कोनो सरकारी काजें की ?

मानव—जी नहि। हम नौकरी नहि करैत छी कत्तहु।

नारद—तखैन ? कुटमैतीक लेल निकलल छी की ?

मानव—जी नहि।

नारद—चिरागेबत्ती आयल छी ने ? कि आन कत्तौ जैबै ?

मानव—जों एत्तय मोन लागि जाय त एत्तहि रहब, नहि त......

नारद—बुझलौं ! सहर मे रहि रहि कए तंग भैं गेलौं, तैं गाम घर देखैके सौख
भेल......लेकिन देखैयें के रहै, त कोनो बड़का गामे मे जैतिहौं......

मानव—हम गाम के देखबा टा लेल नहि आयल छी। हम गाम कें जानै
चाहैत छी—एतय रहि कए......

[नारद आ अन्य दुनू गौंआ एक दोसराक दिसि ताकैत छथि।]

नारद—[किछुकाल चुप्प रहि] एकर अर्थ—अहाँ एहि गाम मे घर बसाबै
चाहै छी !

मानव—हुँ!

नारद—लेकिन एत्ते रहि कै करबै की? खेती-बारी त करि नहि हैत!

पहिल गौंआ—ने दोकाने चलत!

दोसर गौंआ—आ बिजनेस......माने एतौका मांल ओत्ते पहुँचा कै बजार मे बेचि कै मुनाफा करबाक कामो करि नहि सकब राजा सेठ के रहैत! ई काम ओ करै नहि देत आन ककरो।

मानव—हम एहि सब मे सँ किछु नहि करब।

नारद—किये? एहन छोट काम मे मोन नहि लागत की?

मानव—काज कोनो छोट बड़ नहि होइछ। मुदा हमहीं एहि सब काजक योग्य नहि छी, तैं......

प्रवीण—इयैह सब त कोइ गाम मे रहि कै करि सकै छै।

मानव—हम डाक्टरी पास कैने छी। ओहि विद्या क उपयोग त एत्तहु भ' सकैत अछि।

बुचकुन—ओ! त अहाँ डागदर भेलौं!

प्रवीण—ई त नीके भेल अइ गाम के लेल। खाली इयैह गाम नहि, आस-पड़ोसक गामो मे कोनो डाक्टर नहि छथि।

नारद—डाक्टर नहि छै त की? वैद्य त छथि ने!

प्रवीण—से रहने की? आइ कालिह तेहन-तेहन रोग सब दै सुनैत छियै जे ओहि सब मे वैद्य कुछ नहि कै सकै छै।

नारद—तै लेल त अस्पताल छैहे कनिये टा दूर मे......

प्रवीण—कनिटा दूर? कनिटा की हौ? दस-बारह कोस कनी टा भेलै? तै पर एतै कोनो पीच रोड छै जे चट रवाना भेलह आ पहुँच गेलह अस्पताल मे। जा धरि बैलगाड़ी ढुकुर ढुकुर कै कै पहुँचै छै सहर मे, ता धरि रोगी के परान चलि जाइत रहै छै। तइ सै त नीक—गामे मे एक गो नीक डाक्टर रहै......

पहिल गौंआ—से त ठीके कहले भाइ!

दोसर गौंआ—ठीके......

नारद—अच्छा; एकटा बात पूछब ?

मानव—पूछू !

नारद—कोनो गामे मे जायकै डाक्टरी करै के मोन रहै, त कोन-पुर ने कहलियै......हँ दुखहरणपुर, माने अहाँ के अपने गामे मे किये नै गेलौं ?

मानव—ओत्तय सँ बाबूजी कलकत्ता चलि आयल छलाह जखन हम पाँच वर्ष क छलहुँ। तकर पहिनहि हमर माय क स्वर्गवास भ' गेल छलन्हि। गाम मे बाबूजी क हालत नीक नहि छलन्हि। और सामान्य जे किछु छलन्हि, सेहो माय क चिकित्से मे स्वाहा भ' गेल छलन्हि! खैबाक उपाय नहि छलन्हि। तैं शहर मे आबि कए कोनो तरहें एकटा छोट छीन नौकरी धैलन्हि। तहिये सँ हुनक इच्छा छलन्हि जे हम डाक्टर बनी...... से बनलहुँ। हमरा क्यो दुखहरणपुर मे नहि चिन्हैत अछि, ने ओत्त' कत्तहु रहबाक लेल जमीने-जगह अछि हमरा। तैं हमरा लेल जे दुखहरणपुर, सैह चिराग बस्ती...... [किछुकाल चुप्प रहि कए] एत्तहु रहि नहि सकब, त आन कत्तहु......हमरा कोनो......

प्रवीण—नइ, नइ ! से किये ? हम सब कोनो धनिक नइ छी। लेकिन तैयो आतिथ्य धर्म मे पछुआयल नइ रहै छी।

नारद—[हँसैत] लेकिन भाइ ! ई त दू दिन के अतिथि नइ बनै आयल छथिन।

पहिल गौंआ—ठीके ! ई त भरि जिनगीक लेल......

प्रवीण—जिनगी त बड़ नमहर वस्तु भेलै हो ! पहिने हिनकर राति काटैक त इन्तजाम करियैन। हे रौ बुचकुन !!

बुचकुन—जी मालिक !

नारद—[उठैत] तखैन तों हिनकर इन्तजाम करह ! हम सब चलै छियह... एक बेर बाघो दिस जायब ! आज कालिह त चरवाहा सबटा तेना ने... [दुनू गौंआ क दिसि संकेत करैत] चलह हो !

पहिल गौंआ—हँ, हँ !

दोसर गौंआ—चलह !! [तीनू गोटे क प्रस्थान ।]

प्रवीण—[हँसैत, मानव सँ] नारद कखनौ बैसल रहै...... एत्तेक जरूरी खबेर पता चलबाक बादो......?

मानव—नारद के ?

प्रवीण—वैह, जे अहाँ सै अपन गाम नइ जाय के कारण पूछनै रहै......। नामो सै नारद, काजो सै नारद ! जाय दियह। बुचकुन ! तों अङ्गिना जो और हुनका सै कहुन जे आइ और एक गोटाके भानस बनाबथिन ।

[मंच अन्हार भ' जाइत अछि ।]

दोसर दृश्य

[मारीच वैद्यक दुआरि । नारद, मारीच और दुनू गौंआ बैसल छथि ।]

नारद—भाइ ! आब त अइ गाम सै बुझ' तोहर पाट उठि गेलह ।

मारीच—कियै ? से कियै ?

नारद—पूछै छहो—कियै ? तोहर दबाइ आब कोइ लेत' ?

मारीच—लेत कियै नइ ? आस पड़ोस मे और कतय जैतै कोइ ?

नारद—सैह त कहै छियह' जे आब आस-पड़ोस के लोग के गप्पे छोड़ह, हमरे गाम के आधा लोग प्रवीण बाबू के दुआरि पर जायत। देखि लिहो......

मारीच—से कियै ? ओत्ते कोन डाक्टर छै जे......

पहिल गौंआ—रहै नइ, लेकिन आबि गेलै......

मारीच—के ? डाक्टर ?

दोसर गौंआ—हँ हौ ! से जानै नइ छोहो ?

नारद—काल्हि बेरियाखुन ओत्तै गेल रहियै त देखलियै जे के ने एक गोटे अनचिनहार लोग बैसल छै। ओहि अन्हरबा सै पूछलौं ओकरा दै त पता चलल जे ओ सहर सै एत्तै आयल छै एहि गाम मे रहैलै। एत्तै रहि कै ऊ डाक्टरी करत।

मारीच—[जोर सँ हँसि कए] डाक्टरी करतै ? एत्तै रहि कै ? [फेरो हँसि कए] दुइये चारि दिन मे भागि जैतै—देखिहो !

पहिल गौंआ—हमरो सैह बुझाइयै । सहरू आदमी...... गाम मे कहौं मन लागै ?

दोसर गौंआ—एत्ते ने हुनका सनीमा भेंटतनि, ने...हें हें...आने कुछ जे......

नारद—आ जौं नइ जाय ? तखैन ?

पहिल गौंआ—सत्ते त... तखैन ?

दोसर गौंआ—तखैन की हैतै ?

मारीच—तखैन हैतै की ? जाहि से जाय, तकरे बन्दोबस्त करै पड़तै !

नारद—वैह बुधियार कहावै छै जे दूर भविष्यो दै पहिनहि सै सोचि कै तैयार रहै !

पहिल गौंआ—लेकिन, भगैबहो केना ? जौं गाम के आन आन लोग सब...

मारीच—गाम के आन आन लोग सब कें जौं ओ जीत लियै, तखैन की हैत—सैह पूछै छोहो ने ?

नारद—हमर एत्तेक दिनुका तजुरबा कहै छै—सब लोग कखनौ एक दिस नइ भै सकै छै। आ से हैबौ करै, त झगड़ा लगैनाइ कोनो कठिन काज नइ। सब सै बड़का बात—लोग के जे बुझैबहो, लोग सैह बुझतै !

मारीच—ई सब काज करै लेल लोग कें कनेक धीरज चाही... बस्, एतबे टा ! ठीक समय पर ठीक चालि चलने... हें हें हें...

नारद—रह' ने... कुछ दिन जाय दोहो ! हमरा लागैये—उ ओहि अन्हरवे कन रहतै...

पहिल गौंआ—से केना हैतै ? अन्हरबा के बेटा जीवित रहतिहै त एकटा बातो... लेकिन एकटा नौकर के भरोस पर केना परबीन बाबू एकटा अनचिनहार लोग कें रहै देथिन ?

दोसर गौंआ—रहै किये नइ देथिन ? दू-दस दिन त...

नारद—दुइये-दस दिन किये ? जौं ओ ओहि डाक्टर कें ओत्तहि रहै देथिन, त के की कै सकैये ?

मारीच—हम त सैह चाहैत छी।

पहिल गौंआ—से किये ?

दोसर गौंआ—ताहि सै तोरा कोन फायदा हैतह ?

मारीच—[क्रूर हँसी हँसैत] हें हें हें हें हें ! लोग कें सब सै प्रिय वस्तु की होइछै, जानै छोहो ?

पहिल गौंआ—की ?

मारीच—सम्मान ! समाज मे इज्जति ! [हँसैत] आ से जौं नइ रहै, तखैन ?

दोसर गौंआ—ताहि सै त मृत्यु नीक !

मारीच—ठीक ! आब बुझलह, डाक्टर कें ओहि अन्हरबा कन रहने हमरा कोन लाभ हैत ?

पहिल गौंआ—[नकारात्मक भंगिमा मे माथ डोलाबैत] उहुँ !

नारद—धनि छहो भाइ ! एतबो टा नइ बुझलहो ? बिसरि गेलहो ? ओत्ते अन्हरबा कें छोड़ि कै और के के रहै छै ?

पहिल गौंआ—बुचकुन, परबीन बाबू के खबास !

नारद—और !

दोसर गौंआ—और अङ्गना मे... हुनकर पुतहु !

मारीच—बस-बस-बस ! वैह ! बाजी मात करै मे वैह हैती सब सै नीक चालि... लेकिन अइ मे तोरो सब कें...

पहिल गौंआ—माने... परबीन बाबू के पुतहु के संग... डाक्टर बाबू के...

मारीच—प्रेम... [हँसैत] बिधवाक प्रेम... गाम घरक लोग क मोन मे जौं

अइ बात कें ढुकाय देल जाय त... [हँसैत छथि।]

दोसर गौंआ—लेकिन हुनका सब मे जौं असल मे एहन सम्बन्ध नइ होइन, त...?

मारीच—असल ? असल बात के मोले की ? एक बेर अफवाह फैलि जाय त तकरा कोइ रोकि सकै छै थोड़बे ?

नारद—और असल मे तेहन सम्बन्ध नहि हैतैन... सैह के कहि सकैये ? मनुख के लेल असम्भव कुछ नइ—।

[मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

तेसर दृश्य

[प्रवीण बाबू क दुआरि। प्रवीण आ मानव बैसल छथि। प्रवीण हुक्का पीबि रहल छथि।]

मानव—आइ चारि दिन भ' गेल अछि एहि गाम मे ऐलाक !

प्रवीण—हुँ ! [हुक्का पीब' लगैत छथि।]

मानव—मुदा, एखन धरि...

प्रवीण—इयैह कहबै ने जे एखेन धरि कोइ नइ आयल बिमारी के इलाज करावै। [हँसैत] एत्ते अगुतैने से काम नइ चलै छै...।

मानव—अहाँ त सदिखन आशा दैत रहैत छी मुदा...

प्रवीण—अहाँ त विचित्र लोग छी !

मानव—से कियैक ?

प्रवीण—पहिने बताउ अहाँ मनुख थिकौं कि डाक्टर ?

मानव—[हँसैत] दुनू ! तखन हँ—पहिने मनुख, बाद मे आर किछु।

प्रवीण—तखैन किये काल्हि सँ रट्ट लगौने छी जे कोइ नइ आवैये—

नइ आबैये... आँय ? कियै ? अहाँ नइ चाहै छी जे लोग कें कोनो बिमारी नइ हुवै ?

मानव—[हँसि दैत छथि] से त अवश्य चाहैत छी। किन्तु हमरे चाहने की ? से होइत नहि ने छैक! हमरा सभक गाम घर मे खैबा-पीबाक कोनो नियम नहि रहैत छैक, ने सभक घर साफे रहैत छैक। तैं, रोग त हैवे करत लोग कें। तकर अलावे, बूढ़ भेनहि चारुकात क रोगक कीड़ा बेचारे मनुष्य कें दुर्बल पाबि वार क' दैत छन्हि। और सभक ऊपर छथि प्रकृति... कखन ई कोन खेल खेलती से केकरहु पता नहि अछि... बाढ़ि, सूखा, महामारी... लागले रहैत छैक।

प्रवीण—तकर माने इयेह जे एहि दुनिया सँ रोग आ' रोगी के शेष नइ हैत कहियो... सैह ने ?

मानव—[हँसैत] तकर माने... जतय जतय मनुष्य अछि, सबठाम डाक्टर क प्रयोजन हैत।

प्रवीण—ओ! और तैं अहाँ कें अचरज भै रहल अछि जे कियै कोइ नइ आबै छै ?

मानव—ताहू सँ बेसी चिन्ता... दुश्चिन्ता कहि सकैत छी... दुश्चिन्ता भ' रहल अछि ई सोचि कए जे एना और कत्तेक दिन अहाँ सब पर बोझ बनने...

प्रवीण—छी-छी-छी! ई की कहि रहल छी ? अहाँ अतिथि छी, ताहि पर डाक्टर! समस्त दुनियाक सेवा क व्रत नेने छी अहाँ। हम सब की एत्तेक नीच छी जे अहाँ के सेवा नइ कै सकी ?

मानव—हमर कहबाक उद्देश्य से नहि छल। जौं हम चारि दिनक अतिथि होइतहुँ, त ई प्रश्न उठबे नहि करितैक। मुदा, हम त अपना मने बाकी जिनगी एत्तहि बिताब' आयल छी।

प्रवीण—देखू मानव बाबू! आइ हमर बेटा रहतिहै त अहाँ के नीक जेकाँ देखभाल कै सकतिहै। हम आन्हर छी—तैं भरिसक दोष-त्रुटि भै रहलैये...

मानव—ई अहाँ की बाजि रहल छी ?

प्रवीण—नहि त अहाँ ई कियैक सोचि रहल छी जे हमरा एत्ते रहब ठीक नहि हैत...! आइ हमरा सभक ओ पुरनका शान रहितैहै त अहाँ भरिसक...

मानव—[प्रवीण क हाथ धरैत] नहि-नहि ! अहाँ हमरा गलत नहि समझू ! हमर कहबाक तात्पर्य से नहि छल !

प्रवीण—[हुक्का कें रखैत, दोसर हाथ सँ मानव क हाथ कें पकड़ैत] तखन कहू—हमरा एत्ते रहै मे अहाँ के कोनो आपत्ति नइ...

मानव—मुदा आर्थिक दृष्टि सँ...

प्रवीण—हम दृष्टि हीन छी मानव बाबू ! हम कोनो दृष्टि क गप नहि सुनै चाहै छी... कहू...

मानव—[हँसैत] अच्छा, है इयैह कहलहुँ जे अहीं क आश्रय मे रहब !

प्रवीण—[खुश भ' कए] आह ! अहाँ एहि आन्हर-असक्क कें बड शान्ति देलौं ! आइ हमरा लगैये .. हमर हेरायल बेटा हमरा भेंटि गेल—दोसर नाम सँ, दोसर सम्बन्ध मे...! [किछु सोचैत] लेकिन डाक्टर ! हम अहाँ क पथ मे कहियो नइ आयब। आइ नइ त कालिह अहाँक नाम जस हैबे करत... आस-पड़ोस के दसटा गाम सँ लोग चिकित्सा क लेल ऐबे करत। भै सकै छै—तखनि अहाँ कें और बड़ तथा और नीक जगह के प्रयोजन हैत। हम अहाँ कें रोकब नइ तखनि।

मानव—नहि... नाम-जस आ अर्थ क लेल हम एत्तय नहि आयल छी। हम त बस मनुष्य जकाँ जीयै चाहैत छी मनुष्य क बीच। हम अहाँ कें कहियो नहि बिसरब... कहियो नहि बिसरि सकैत छी ! [उठि कए पदचारणा करैत] हमरा अर्थ क लोभ नहि अछि... मुदा तकर प्रयोजन त पड़िते छैक। अहाँ हमरा आश्रय देलहुँ—ई अहाँ क उदारता थिक। और तैं अहाँ कें जाहि सँ कोनो असुविधा नहि होइक, तकरा दिसि ध्यान देब हमर कर्त्तव्य थिक।

प्रवीण—हमरा कोन असुविधा हैत ? हमर बेटा जीवित रहितैहै त ओ नहि रहितैहै, खैतिहै ?

मानव—ओहो त बैसल नहि रहितथि ! ओहो त उपार्जन क' कए अपन परिवार कें सहायता करितथि ! तखन हमरा सँ अहाँ कियैक नहि ओतबा लेमै चाहैत छी ?

प्रवीण—अच्छा, ठीक छै ! से देखल जैतै ! पहिने कमायब आरम्भ त करू !!

मानव—[हँसैत] सैह त मोसकिल छैक। तें कहैत छलहुँ जे एना और दुइ-दस दिन चलैत रहल त...

[तावत् राजा सेठ प्रविष्ट होइत छथि। हुनका देखितहि मानव चुप भ' जाइत छथि।]

राजा—गोर लागै छी, चाचा !

प्रवीण—ओ ! राजा छे ? नीके रह' !! त की हालचाल छै...?

राजा—हालचाल त अहाँ सभक आशीर्वाद से ठीके छै। [मानव क दिसि देखैत] त इयैह छथि डाक्टर बाबू ?

मानव— जी हँ ! हम छी मानव !

राजा—परनाम ! [मानवो हाथ जोड़ैत छथि।]

प्रवीण—त तों कत्तै सुनलहो डाक्टर छै ?

राजा—काल्हि हटिया मे नारद मिसर कहै रहथिन। आ आइ त वैद जी सेहो कहलखिन। ओ आबै छथिन ने हमर माय कें देखै... से देखथिन की ? हुनकर त अलाइ-बलाइ जड़ी-बूटी...

मानव—जड़ी-बूटी कें छोट नहि बूझू ! आधुनिक चिकित्सा-शास्त्र क आरम्भ ओत्तहि सँ भेल छल !

राजा—से भेल हैतै ! हम भेलौं व्यापारी, ऊ सब हमरा बूझल नइ यै ! हम त देखै छी—जे पाइ खर्च भै रहलै यै, ताहि सै लाभ होइ छै वा नइ। एत्ते दिन सै ऊ माय कें देखि रहल छथिन—लेकिन हमरा त कोनो फायदा बुझाइ नइ पड़ि रहल यै।

प्रवीण—त आब तोरा चिन्ते कोन ? डाक्टर त आबिये गेलखुन अपन गाम मे ! हिनका सै देखाय लहुन !

राजा—हँ, हमहूँ त सैह सोचि कए ऐलौं ! अहूँ सै एम्हर बहुत दिन सै भेंट-घाँट नहि भेल रहै, आ... [कहि कए आंगन क दिसि देखै लागैत छथि; पुनः अपना कें सम्हारैत] आ' डाक्टरो बाबू सँ परिचय भै जायत !

मानव—अहाँ क माय कें भेल की छन्हि ?

राजा—ई त अहीं लोकनि देखि कै बतैबै। हम सब की जानै गेलौं ? [किछु सोचैत] त अहाँ एकटा काज किये नइ करैत छी ?

मानव—कोन काज ?

राजा—एत्तै त रहै मे अहाँ कें दिक्कत हैबे करत... अहाँ हमरे ओत्तै किये नइ आबि जाइत छी ? हम पक्का देने छी, सड़क क बगले मे... हमर मकान मे कैकटा कमरा एखनौ खालिए पड़ल छै। अहाँ चाही त ओत्तहि रहबाक बन्दोबस्त कै कै एकटा डिस्पेन्सरिओ...

मानव—मुदा, हमरा त एत्तै कोनो असुविधा नहि भ' रहल अछि...

राजा—नइ, असुविधा नइ... तखन हमरा ओत्तै बेसी आराम...

मानव—हमरा आराम मे रहबाक आदति नहि अछि। हम त ठीक क' नेने छी जे एत्तहि रहि कए...

राजा—[हँसि कए] से रहबाक लेल ई जगह त नीके छैक ! जे डाक्टर दसटा गाम के लोग के सेवा करत, तकरो त नीक जकाँ सेवा होना चाही ! हें हें हें ! हमरा ओत्तै त बस हमर माइयेटा; ओहो बेसी बीमार छथि। नौकर-चाकर त नीक जेकाँ... माने आपन लोग जेकाँ देखभाल नहिये कै सकैये। लेकिन एत्तै त से बात नइ...

मानव—आश्चर्य !

राजा—किये ?

मानव—अहाँ क एत्तेक धन, एत्तेक सम्पत्ति... और अहीं विवाहित नहि छी ?

राजा—रहिये। एखैन नइ छी।

मानव—माने !

राजा—प्रायः दस वर्ष पहिने ओ स्वर्गवासिनी भै गेली ! [मुँह कें करुण बना

कए किछुकाल चुप चाप रहैत छथि।]

प्रवीण---तकर बाद हम सब कत्ते बुझौलौं... समझाबैके कोसिस कैलौं ! लेकिन ई तैयारे नइ होइ छथिन। नइ त राजा सेठ के लेल...

राजा---की करू चाचा जी ! हुनका हम बिसरियो नइ पाबै छियैन ! [किछु-काल चुप रहि कए पुनः मानव कें] बुझलौं मानव बाबू ! हुनक गेलाक बाद ठीक कैलौं जे जौं हुनके सन और क्यो भेंटै, तखनै बियाह करै लेल सोचब।

मानव---भेंटली ?

राजा---जे भेंटबो करै यै, से राजी नइ होइ यै। आ जे राजी होइ यै, से हुनका सन के नइ होइयै ! इयेहटा दुःख रहि गेल यै। लेकिन, हम खोज मे छी... [दीर्घ-श्वास त्यागि कए] जे हो ! ऊ सब बात छोड़ू ! कहू---हमर माय के चिकित्सा करै लेल अहाँ तैयार छी वा...?

मानव---से कियैक नहि रहब ? अवश्य करब ! अही लेल त...

राजा---बेस ! बुझलौं---ओइ वैदवा सै कुछ नइ हैत। त अहाँ आइये सै शुरु कै दियौ ने !

मानव---अति उत्तम ! हम आइये बेरिया खुन अहाँ क ओत्तै पहुँचि जायब।

राजा---फीस-तीस के लेल अहाँ चिन्ता नइ करू ! से अहाँ जे मांगब...

मानव---हम की मांगब ? जे अहाँ उचित बुझैत छी, सैह देब !

राजा---जानैये छी---हम व्यापारी छी। नीक चीजके लेल पाइ खरच करै मे पाछू नइ हँटै छी ! अहाँ चाही त रोजाना हिसाब के जगह मे मास मे एकहि बेर एकटा नीक रकम लै सकै छी। लेकिन, तकर माने---माय के चिकित्सा के सबटा भार रहत अहीं पर !

मानव---अवश्य !

राजा---अच्छा ! त बेरिया खुन हम एकटा सिपाही कें पठा देब---अहाँ कें पथ देखा कै लै आनै लेल।

मानब---बेस।

राजा—अच्छा; त हम चलै छी ! [जाइत-जाइत पाछाँ घुरि कए] एकटा बात त बिसरिये गेल छलौं। दिन-पर-दिन हम... चाचा जी !

प्रवीण—हँ।

राजा—दुलहिन क स्वास्थ्य केहन छनि ? ठीक छथिन ने ?

प्रवीण—तों त जनिते छहो—ऊ किछु भेलो सँ ककरहु किछु नइ कहै छथिन।

राजा—आब त कोनो चिन्ता के बात नहि। घरे मे डाक्टर छथिन !

प्रवीण—हँ, सैहटा भरोस यै !

राजा—आबै काल हमर माय कहि देने रहथिन जे दुलहिन कें कहबाय दिहौन जे ओ आबथिन ! पहिने त जैते रहथिन... आब की भै गेलैन, नइ जानि। से देखू—हम कहै लेल बिसरिये गेल रहौं !

प्रवीण—हम कहबाय देबनि हुनका।

राजा—मानव बाबू ! अहूँ मन राखब... ऊ बिसरियो जैथिन त अहाँ अवश्य... माने अहाँ सँ त हुनकर... हें हें हें... अच्छा, त चलैत छी।

[राजा प्रस्थानोद्यत होइत छथि। मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

चारिम दृश्य

[प्रवीण बाबू क आंगन। खवास आंगन बोहारि रहल अछि। करुणा चाउर बीछि रहल छथि।]

बुचकुन—सत्ते कहै छी, मालकिन ! आइ दुइ दिन सँ डाकदर बाबू मालिक के जेहन सेवा कै रहल छथिन, से आइ कालिह कोनो बेटो आपन बाप के नइ करै छै। [करुणा एक बेरि बुचकुन क दिसि देखि कए पुनः चाउर बीछै लगैत छथि।] से हमहीं टा नइ, गाम के आनो आन लोग सब कहि रहल यै।

करुणा—की कहि रहल छथिन ऊ सब ?"

बुचकुन—इयैह, जे हम कहलौं। [चुप रहि कए] अइ दुइ दिन सै त ऊ राजा सेठो कन नइ गेल रहथिन। कालिह त राजा सेठ अपनहि आबि गेलखिन। ऊ भरिसक कचहरी गेल रहथि—तैं मालिक के बेमारी दय पतो नइ रहैन।

करुणा—अइ दुइ दिन मे ओ दोसर-दोसर मरीज कें नइ देखलखिन की ?

बुचकुन—देखलखिन, लेकिन बेसी नइ! उने त सुनै छियै राजा सेठ के माइयो के हाल पस्ते...

करुणा—के कहलकह ?

बुचकुन—अपनहि कहै रहथिन कालिह। कहै रहथिन जे दुलहिनो जी बहुत दिन से नइ गेलखिन यै, से...

[एतबा कहितहि व्यस्तता देखा कए करुणा भीतर चलि गेलीह। हुनका चलि गेलाक बाद बुचकुन बोहारब समाप्त क' कए बाहर चलि जाइछ।]

करुणा—[प्रविष्ट भ' कए] बुचकुन! कत्ते गेलहो ?

बुचकुन—[दोसर दिसि सँ प्रविष्ट भ' कए] की कहै छी मालकिन ?

करुणा—आटा त आइये भरि के छै। गहूम पिसा कै नइ आनलहो ?

बुचकुन—से हम अखनिये जाइ छियै। [भीतर जा कए एक बस्ता गहूम कन्हा पर उठौने मंच द' कए दुआरि दिसि प्रस्थित होइछ। किछु दूर गेला क बाद पुनः घुरि अबैछ] हे! वैह आबि रहल छथिन।

करुणा—के आबि रहल छथिन ?

बुचकुन—वैह, ननकू मिसर क पलिवार...

करुणा—ठीक छै! तों जा!! [बुचकुन चलि जाइत अछि। 'दुलहिन', 'दुलहिन ऐ' कहि कए हाँक देत कौशल्या प्रविष्ट होइत छथि। हुनका ऐबाक पहिनहि करुणा एकटा कपड़ा सीयै बैसैत छथि।] आउ ने काकी!

कौशल्या—सुनलियह, हिनका कोन ने बेमारी भै गेल छैन; तैं कहलियह जे चलि कै एक बेर खबरि लैये ली।

करुणा—आउ! बैठू! [एकटा पिढ़िया दैत छथि।]

कौशल्या—[बैसैत] ई की सी रहल छह ?

करुणा—सी नइ रहल छी, रफू कै रहल छी।

कौशल्या—ओ! त हिनकर बेमारी के की इलाज भै रहल छै ? कालिह् वैद जी कें पूछलियैन त ऊ मुँह लटका कै चलि देलखिन। कहलखिन, हम की जानी ? बूझह! हुनका त खबर लेबाक चाहियैन एक बेर। भनहि् ऊ इलाज नइ कै रहल छथिन।

करुणा—आइ कुछ नीक छथिन!

कौशल्या—की भेल रहैन ? डागदर की कहै यै ?

करुणा—ऊ त कहै छथिन जे असल रोग बुढ़ापा छैन।

कौशल्या—रोग कहीं बुढ़ापा हुवै ? होइ की छैन हुनका ?

करुणा—कफ बैसि गेलैन छाती मे—बोखारो खूब रहैन अइ दुइ दिन सै।

कौशल्या—खाना-पीना ?

करुणा—बाबू जी के त, जानते छियै, आदति छैन जे बोखार भेल कि खाना-पीना सबटा बन्द।

कौशल्या—हूँ। ऊ त सुरुहे सै अहिना करै छथिन।

करुणा—लेकिन अइ बेरि से नइ भेलैन।

कौशल्या—से कियै ?

करुणा—बुचकुन कहै यै जे डागदर बाबू हुनका सै जबरदस्ती कैलखिन—कहलखिन, खाय पड़त; त मानि गेलखिन।

कौशल्या—हुँ! सुनै छी, हिनका बेटा जकाँ मानै छथिन। [एहि बात पर करुणा चुप भ' जाइत छथि।] कोइ कुछो कहैन, छैथ ई नीके डागदर। परसौनीवाली कें तीने सुइया मे ठीक कै देलखिन। आ वैह परसौनीवाली के तरबा घिसाय गेल रहै बैद जी कन घुरैत-घुरैत। [चुप रहि कए] त की सब बना रहल छह ?

करुणा—[म्लान हँसी हँसैत] और की बनायब ? कद्दू के तरकारी आ रोटी।

कौशल्या—त ई सब डागदर कें रुचै छै ? ऊ भेलै सहर के रहनिहार आ...

करुणा—नइ रुचने करबै की? गाम मे जखैन रहै ऐलखिन, तखैन एहन खाना त खाइये पड़तैन—

कौशल्या—कियै ? कुछ कहबो आर करै छथिन ? [करुणा नकारात्मक भंगिमा मे माथ डोलबैत छथि।] आँय हे—आब त कमबैयो लागल-खिन—त पाइ-कौड़ी नइ दै छथिन ?

करुणा—से कोनो हजार-दुइ हजार कमबै छथिन थोड़े ?

कौशल्या—नइ हजार त, सौ-दुइ-सौ त जरूर कमबै हैथिन। सुरू सुरू मे तों सब हुनका लेल जत्ते कैलहो, तकरो त एकटा मोल छै।

करुणा—जेहो कमबै छथिन, तकर बेसी भाग खर्च भै जाइ छैन खैराती इलाज मे।

कौशल्या—से ककरा खैरात करै छथिन ई ?

करुणा—गरीब-गुरबा सब सै पैसा कहाँ लै छथिन ? देखै त छथिने, जरूरत भेल त दबो दै छथिन अपने खर्च सै—।

कौशल्या—ओ! तैं हमर हरबाहा कहै रहै जे ओकर बेटी कें डागदर बाबू मन्तर सै ठीक कै देलखिन। हम बुझियै—ओहिना कहै छै। ओकरा कत्तै सै पैसा ऐलै जे दवा-दारू पर खर्च करै।

करुणा—तैं ई सब कै कै बचबै की करै छैन ?

कौशल्या—हमरा त ई कोनो नीक बात नइ लागलह। छोटका के जत्ते दबाय कै राखी ततबे नीक। आइ बिना पैसा के दबाय भेंट रहल छै त काल्हि भै कै बुझतै जे नेमे सेह छिकै—पैसा रहबो करतै त नइ देतै...

करुणा—कुसमी के की हाल, चाची ? एखैन कानतो यै ?

कौशल्या—की कानत कुसमी ? कत्ते नीक जकाँ सादी-बियाह करबौने रहियै, से त देखनहि रहक। और आब देखह—दुइये साल मे विधवा भै कै आबि गेल छै! करै छै... घर के काज करै छै। लेकिन रहि-रहि कै उदास भै जाइ छै। एकटा बेटी छै...भरिसक सोचै हैतै—तकर केना की हैतै!

करुणा—अहाँ के पुतहु के संग पटै छै ओकरा ?

कौशल्या—है ! की पटतै ? रौतावाली के त गपे छोड़ह । हरबखत ओकरा सँ लागले रहै छै । कुसमी करबे की करतै, तोंही कह' ! सब त तोरा सन नहिये भै सकै छै । माने, तोरा सन मन के जोर सब कै नइ ने... । पूछलियै, ओत्तहि कियै नइ रहि गेलहीं ? एत्तै भौजी के नौरी भै कै रहै से नीक त ओत्तहि— । त कहै यै जे नइ, से ओत्ते ओकर दुलहा के एकटा पितियौत भाइ रहै, तकर नीयत ठीक नइ रहै । हम कहलियै—तोहर नीयत ठीक रहै त तोरा के की बिगाड़ि सकै छौ ? इयैह देखहीं ने—तोरा दय कहलियै, जे फलना बाबू के पुतहु त एत्तहि छै, ससुर के सेवा कै रहल छै केहन नीक जकाँ । त कहलक जे हुनकर बात छोड़—हुनकर त कोनो तेहन दीयर नइ ने छनि जे......

करुणा—नीके कैलखिन जे आबि गेलखिन—

कौशल्या—की नीक कैलक ? कोनो दिन चैन सँ रहि सकतै एत्तै दुलहिन के लेल ? जौं-जौं ओकर बेटी नमहर हैतै, बियाह करैके चिन्ता बढ़तै—तौं-तौं और... । आ तोरे दय कहलकै, से कोनो ठीक कहलकै थोड़े । ऊ त बात के टारि देबाक लेल कहलकै । नइ त, इयैह देखहो ने—तोंही सब जे डागदर कें रखने छोहो—से आस-पड़ोस के लोग तै लेल कम बोलै जाइ छै ? लेकिन तै सँ की ? हम नीक त हमर के की बिगाड़ि सकैयै ? हमरा त कोइ कुछो कहै आबै छै त हम इयैह कहै छियै जे तौं सब करुणा कें नइ जानै छोहो—भनहि डागदर कें नीयत खराब हुयै, लेकिन करुणा के कोइ नइ बिगाड़ि सकै यै । तखैन , हँ, हम त एतबे कहबह जे—लोग अपना जानि कए थोड़बे ई विष पीयै छै ? ई त लोग के जवानी जे ने करावै । तैं—

[तावत् नेपथ्य सँ मानव गला खखारैत छथि । संकेत पबितहि कौशल्या ठाढ़ भ' जाइत छथि । करुणा घोघ कें कनेक बेसिये नमहर क' लैत छथि । मानव प्रविष्ट होइत छथि ।]

अ-अच्छा, त एखैन हम चलै छियह ! भरिसक हिनकर खाय के बेर भै गेलैन । हम बाद मे कखनो...

करुणा—कियै ? अहाँ बैठू ने काकी ता !

कौशल्या—[मानव दिसि नीक जकाँ देखैत छथि । मानव आबि कए ओसरा पर बैसैत छथि ।] नहि, हम त बस... ओ केहन छथि, सैह जानै लेल... [मानव सँ] अहाँ माटिये पर कियै बैठि रहलिऐ डाक्टर बाबू ? हे इयेह—पिढ़िया पर बैठियौ ने ! [करुणा मानव क लेल जलखै क बन्दोबस्त करै प्रस्थित भेलीह ।]

मानव—नहि-नहि ! ठीके छैक । अपने कियैक कष्ट क' रहल छी ?

कौशल्या—एखन ओ केहन छथिन ? नीके ने ?

मानव—आइ नीके छथि । लेकिन बड्ड कमजोर भ' गेल छथि—चलि फिरि नहि होइत छन्हि ।

कौशल्या—बुझू त ! एक त आँखि नइ, ताहि पर चलि-फिरि नहि सकथिन त एहि घर के की हाल हैतै ? [मानव कें चुप देखि कए] हूँ—ओना अहाँ छी, तँ हिनका सभक दुश्चिन्ता करै के प्रयोजन नइ । नइ त... [तावत् जलखै नेने करुणा प्रविष्ट होइत छथि] अच्छा, त हम एखैन चलै छी—[कौशल्या प्रस्थान करैत छथि । करुणा मानव क आगाँ थरिया रखैत छथि । मानव चुपचाप खाइत छथि—करुणा दूर मे जा कए ठाढ़ रहैत छथि । मंच अन्हार भ' जाइत अछि ।]

पाँचम दृश्य

[राजा सेठ क दुआरि—राजा, मारीच और नारद बैसल छथि ।]

राजा—कह' वैद । की देखलह ?

मारीच—हमरा त बुझाइ ये ई कुछ खाय-पीयै द्वारे भेल छै । दु-चारि खोराक दवाय सै ठीक भै जैतै ।

राजा—उहुँ ! तों जत्ते सहजें एकर समाधान कै देलहो, हमरा त ई तेहन नइ लागि रहल छह।

नारद—हमरा विचारें—दुइ-तीन दिन जाय दहो, त अपने बुझाइ पड़तै जे असल मे की छियै !

राजा—ई तों की कहले भाइ ?

नारद—कियै ?

राजा—दुइ-चारि दिन मे जौं और ओहन दाग निकलि आवै मुँह पर त हमहीं-तों नइ, गाम के सब के नजरि मे पड़तै से। लोग बाग पूछै लागतै—की भेलै नइ भेलै…

नारद—पूछै लागतै त पूछै दहो ! तै से की हैतै ?

राजा—आ हा ! तों नइ बुझि रहल छहो ! वैद ! तोंही कहो ने !!

मारीच—नारद भाइ कें पते नइ छैन त केना बुझथिन ?

नारद—आखिर बात की छियै ? एत्ते नुकाछिपी कियै ?

मारीच—खाली वैह रोग टा रहतिहै त एकटा बातो। कुसमी कें त बच्चो होबैया छै !

नारद—[चौंकैत] एँ ? कुसमी कें…

राजा—चुप ! चुप !! जे सुनले से सही बात छिकै। लेकिन एकरा परचारै के जरूरत नइ।

नारद—[साश्चर्य] लेकिन… ओकरा… ?

मारीच—[माथ डोला कए] हूँ।

नारद—आश्चर्य !

मारीच—नारद भाइ कें कियै अचरज भै रहल छैन, जानै छहो ? हिनका पते नइ और गाम मे एत्ते बड़का घटना घटि गेलै… तैं।

नारद—कुसमी माय कें पता छैन ?

राजा—[जोर सँ हँसि दैत छथि] तों दिन-दिन मेहायल जाय रहल छहो भाइ ! हुनका एखैन पता चलतिहैन त ओ सौंसे गाम मे नाचने सबके

कोसनें घुरतिहथिन। जानै नै छहो ? एखैन माय-बेटी मे बोला-भुकी बन्द छै !

मारीच—ओकरा भाइ-भौजाइ सें केहन पटै छै से त जानते छहो !

नारद—से सब के नइ जानै यै !

राजा—ओ जे सबहक संग झगड़ि कै आपन अलग रहै यै सेहो त जानते छहो।

मारीच—लेकिन ईहो आश्चर्य ! केसब के नइ राखै के रहै बहीन कें त भगाइये देतिहै।

राजा—भगाय देने गाम के लोग नइ दुसतिहै ? आ कतबो हुवे—छियै त बहिनिये। तें सोचने हैतै—आपन जमीन मे सें दू कट्ठा पर ओकरा एकटा झोपड़िए बनाय देवै त कोन बेजाय। बदनामो नइ हुवे पड़ल आ रोज रोज के झाँव-झाँव सें सेहो बचलौं।

नारद—ओकर बेटी त खूब धूरा मे औंघराय-औंघराय खेलै छै। कोइ देखै बला नहिये—छोट जाति के बच्चा सबहक संग नाचने घुरै छै।

राजा—ओकरे लै कै त कुसमी माय सें और झगड़ा ! केसब के दुलिहन कै त एत्ते दिन भेलै बेटा बेटी नहिये भेलै। तें बूढ़ी के मन जे कुसमी के बेटी कें राखी अपना पास। आ इने कुसमी सब सें लड़ि झगड़ि कए बेटी कै लै कै अलग भै गेलै...

मारीच—भरि दिन लोग कन धान कूटै मे रहै छै त लड़किया के सम्हारतै के ? अहिना दूरि हैत रहतै।

नारद—लेकिन, हमरा एकटा बात कहो—कुसमी पर केकर एहेन नजरि रहै जे—

मारीच—नजरि त बहुत गोटे के रहै। ओकर उमरे की भेलै यै ? सुनै छी ससुरारियो मे के ने अहिना...

नारद—सैह जौं करैके रहतिहै त ओत्तहि रहि जैतिहै—

मारीच—नइ बुझलहो ! तखैन ओकर दुल्हा मरबे कैलकै रहै। शोक ताजा रहै। तकर आब पाँच-छौ साल भै गेलै। एखैन जत्ते दिन जाइ यै,

सरीर ततबे—। त तों ही कहो, एहेन सरीर पर लोभ केकरा नइ हैतै ?

नारद—लोभ भने हजार लोग कें रहै। बच्चा त एक्के गोटे के हैतै !

मारीच—से हम की जानि गेलियह ?

नारद—[सन्देहात्मक दृष्टियें देखैत] तखेन तों ओकरा देखै कियै गेलह ? के तोरा देखै कहलकह रहै ?

राजा—से त हम्मे कहलियै ! हमरो अइ ठाम कूटै-पीसै के काम करै छै। हम मुँह मे दाग देखलि यै त पूछलि यै जे कि छियै ! कहलकै—पता नइ, लेकिन खूब दर्द करै यै। कहलि यै—देखबहुन वैद जी सैं ! कहलकै दवाय करै के पैसा कत्तै सैं ऐतै ? तैं हमहीं वैद कैं बोलैलौं। आब त देखै छी—रोग एकटा नइ, दू-दूटा।

नारद—आब करबहो की ?

राजा—कुछ त करै पड़तै। बदनाम भै जाय त तोरो-हमरो लोग दुसतह !

नारद—हमरा कियैक दूसत कोइ ?

राजा—आखिर हमरे सब के गाम के लड़की छियै !

नारद—त हम सब कैये की सकै छी ?

मारीच—अस्पताल पठाय कै...

राजा—नइ-नइ ! से कैना हैतै ? ओत्तै त पूछबे करतै—अइ बच्चा के बाप के छियै ? बिना बाप के दस्तखत के ओसब नोकसान करै लेल तैयार नइ हैतै !

नारद—तखैन ?

राआ—सैह व्यवस्था कै रहल छियें कि ! तों की बुझलहो, हम्मे बैठल छियैं...?

मानव—[नेपथ्य सँ] राजा सेठ !!

राजा—मानव बाबू ! आउ, आउ !! [मानव प्रविष्ट भए चुपचाप एकटा कुर्सी पर बैसैत छथि। किछु बजैत नहि छथि।] केहन देखलि यै ? [मानव असन्तुष्ट दृष्टियें राजा सेठ क दिसि एक बेरि देखि काए मूड़ी खसा लैत छथि।] वैद जी त कहै छथिन जे ओकरा विशेष कुछ

नइ भेलै, तखैन...

मानव—[आश्चर्य-चकित भए] विशेष किछु नहि भेलन्हि ?

मारीच—हँ ! हमरा त लागै यै—कुसमी कें पितंगिया उछललै यै... वैह जकरा अहाँ सब एलर्जी कहै छी...

मानव—माफ करब, हम अहाँ क संग सहमत नहि छी।

मारीच—तखैन अहाँ की कहै छी...? भेलै त कोनो चर्म रोगे...

मानव—चर्म रोग त अवश्य भेल छन्हि, कियैक त दाग सवटा चमड़े पर पड़ल छन्हि। मुदा, तकर कारण की थिक, डाक्टर-वैद्य क काज भेल सैह सब बतायब—।

मारीच—[व्यंग्यात्मक स्वर मे] वेस ! बुझलौं वैद कै चिकित्सा-शास्त्रक नीक ज्ञान नइ रहि सकै छै—

मानव—सबटा बात क टेढ़ अर्थ निकालब अहाँ नीक जकाँ जनैत छी। ई छौ मास सँ त सैह देखि रहल छी।

राजा—आहाहा ! अहाँ दुनू त... वैद ! तोंही चुप भै जा ने ! पहिने सुनहुन त, ऊ की कहै छथिन।

मारीच—कहौथ ने ! सैह त हमहूँ जानै चाहै छियैन।

मानव—कुसुम बहीन सन्तान-सम्भवा छथि। [कहि कए राजा, नारद आ मारीच क प्रतिक्रिया कें बुझबाक चेष्टा करैत छथि। तीनों कें चौंकैत नहि देखि कए विस्मित होइत छथि। ओम्हर तीनों गोटे एक दोसराक दिसि देखैत छथि मात्र।] लगैत अछि, अहाँ सब लेल ई बात नव नहि थिक !

मारीच—एतबो टा नइ बुझबै हम ?

मानव—अहाँ क बोधशक्ति क परीक्षा लेब हमर काज नहि थिक।

राजा—और ओकर मुँह पर के ओ...

मानव—हुनका खराब रोग भेल छन्हि !

मारीच—खराब रोग ?

राजा—माने ?

मानव—माने यौन रोग। भी० डी०—भेनरल डिजीज !

[किछु काल सब चुप-चाप रहि जाइत छथि।]

हमरा देखैते देरी सन्देह भेल छल जे ई मामूली कोनो एलर्जी वा चर्म रोग नहि थिकन्हि।

नारद—लेकिन आश्चर्य ! ई रोग कुसमी के केना भै सकै छे ?

मानव—से हम कोना कहू ? हुनका जे भेल छन्हि, सैह हम कहलहुँ।

मारीच—एहि गाम मे... ई कोना...?

मानव—ई रोग दू तरहें भ' सकैत अछि—एक, जौं क्यो आपन शरीर पर अत्याचार करै, विकृत यौन संसर्ग करै—तखनि। नहि त, जौं एहन कोनो लोग क संग संसर्ग करै, जकरा ई रोग छैक।

नारद—कुसमी जे कुछ कैने छै, शरीर के ज्वाला के शान्त करै लेल कैने हैतै। तकर माने ई नइ जे ऊ जे मन हुवे सैह कैने हैतै...

मारीच—सब सें बड़का बात ई जे अइ तीन-चारि साल मे गाम छोड़ि के कुसमी इन्ने-उन्ने कत्तौ गेलो नइ छै। तकर माने...

मानव—तकर माने अही गाम क कोनो लोग सँ हुनकर निकट सम्बन्ध रहन्हि। और ओहि पुरुषे सँ हुनका दू-दूटा उपहार भेंटलन्हि—नाजायज सन्तान और यौन रोग !

नारद—लेकिन के भै सकै ये एहन आदमी ?

मानव—से पता लगायब कोनो कठिन काज नहि।

नारद—अहाँ पता लगाय लेलौं जे ऊ... !

मानव—कोनो प्रत्यक्ष प्रमाण नहि अछि। तखन...हँ, एहि गाम मे जनिका जनिका ई रोग छन्हि, हुनके मे सँ क्यो...

मारीच—एहि गाम मे ककरा छै एहन रोग ?

मानव—अहाँ वैद्य छी। ताहि पर अही गाम क लोग छी। तैं—

मारीच—हम त अही गाम कियै, आसो-पड़ोस मे ककरहु जानै नइ छियै, जेकरा......

मानव—लेकिन हम जानैत छी! [कहि कए राजा क दिसि देखैत छथि।]

राजा—[एत्तेक देर धरि चुपचाप सभक बात सुनैत रहथि। अकस्मात् हड़बड़ा कए कहै लगैत छथि—] स-से जे होइ! एखैन तेकर कोन जरूरत? हम सब से एखैन जानिये कै की करब? एखैन त ई लड़किया के केना की कैल जाय, से...। [किछु सोचैत] लेकिन पहिने अहाँ हमर माय कैं कनी देखि लियौ मानव बाबू! ओ बेचारी कालिह सैं... कालिह त अहाँ आन ठाम गेल रहियै, तैं—। [नारद आ' मारीच सँ] अच्छा, त तों सब एकटा काज करह! एखैन जा!! तावत् मानव बाबू हमर माय कै देखै छथिन। हम्मे हिनका सै बात कै लेबैन जे केना की कैल जैतै! तोरा आर कै बाद में कहबह—।

नारद—[असन्तुष्ट भए] अच्छा! ठीक छै— तखैन...

[मारीच किछु कहैत नहि छथि। ओ क्रुद्ध भए मानव क दिसि देखैत छथि। तत्पश्चात्, दुनू गोटे निकलि जाइत छथि। मंच पर मात्र राजा आ मानव रहि जाइत छथि। दुनू एक दोसरा क दिसि एकटक देखैत रहि जाइत छथि।]

राजा—तखैन अहाँ हमरा चिन्हि गेलौं, डागदर साहेब!

मानव—अहाँ कें हम बहुत दिन पहिनहि चिन्हि गेल छलहुँ, राजा सेठ! आइ एकटा नव रूप देखि रहल छी मात्र! [पाछाँ घुरैत] सुनैत छलियै, साँपे टा केंचुवा बदलैत रहैत छैक; आब देखैत छी जे मनुष्यो...!

राजा—[हँसैत] सावधान! साँप लेकिन काटतो छै।

मानव—जकरा मन्त्र क पता छैक, तकरा कोन डर?

राजा—राजा सेठ कै आइ धरि कोइ कोनो मन्तर सै वश नइ कै सकलै।

मानव—अहाँ हमरा डरा रहल छी? ओहि भोथ अस्त्र कें आन आन लोग क लेल सम्हारि कए राखू सेठ!

राजा—डाक्टर!!

मानव—हँ, सेठ! अहाँ क अर्जल प्रतिष्ठा कें हम एक पल मे धूलि मे मिला सकैत छी। आइ जौं सब कें पता चलि जाइक जे राजा सेठ आपन यौन रोग क

चिकित्से क लेल डाक्टर कें हर मास एत्तेक टाका दैत छथि, हुनक माय क इलाज एकटा बहाना मात्र थिकन्हि— त कतय रहत अहाँ क राजत्व ? अहाँ जनता कें नहि चिन्हैत छी सेठ। ओ एक बेरि ककरहु विरुद्ध भड़कि जाइक त ओकरा क्यो नहि रोकि सकैत अछि।

राजा—ई नइ भूलि जाउ जे आइ जे दसटा गाम के लोग अहाँ कें जानै यै, तकर मूल मे छै इयेह राजा सेठ। हम अहाँ कें सब सें पहिने इलाज के लेल नइ बोलैतिहौं त आइ अहाँ...

मानव—एत्तहि रहितहुँ आ एक्के तरहक प्रतिष्ठा क संग ! हमर जस-प्रतिष्ठा क कारण हमर काज थिक, अहाँ क कृपा नहि।

राजा—सैह जौं हुवै त हमर कृपा कियै ग्रहण कैने रही तखैन ? तखैन अहाँ के नीति-ज्ञान कत्तै रहै ?

मानव—मन नहि अछि, अहाँ की कहने रही तखन ? अहाँ कहने छलहुँ— ई रोग शहर क कोठा सँ अहाँ क देह मे आयल छल। अहाँ कहने छलहुँ जे आब अहाँ ओहि सब ठाम नहि जाइत छी... ओ सब विपत्नीक हैबाक बाद शरीर क भूख मेटाबैक लेल कैने छलौं ! मुदा आइ अहाँ क जे रूप देखैत छी......

राजा—आइ एहन की भै गेलै ये जे हम असह्य भै गेलौं ?

मानव—अहाँ पहिने जे करैत छलहुँ वा कैने छलहुँ, से अहाँ क पसन्द छल। हम ने पादरी छी ने समाज-सुधारक, जे ओहि पथ सँ अहाँ कें घुरैबाक चेष्टा करब।

राजा—तखैन आइ एत्ते नीति-शास्त्र कियै पढ़ि रहल छी ?

मानव—नीति-शास्त्र नहि... हम अहाँ सँ समस्त सम्पर्क छिन्न करै चाहैत छी। अहाँ क लोभ-लालसा अहाँ कें एत्तेक नीच बना देलक अछि जे एक असहाय विधवा क जिनगिओ कें ल' कए अहाँ दानवीय खेल खेलै लागलहुँ ! अहाँ क चरित्र निर्मल नहि छल— से जनैत छलहुँ। मुदा अहाँ एत्तेक गिरल लोग छी, तकर पता नहि छल।

राजा—लेकिन एत्ते आसानी सँ अहाँ कें मुक्ति नइ भेंटत डाक्दर साहेब !

मानव—तकर मतलब ?

राजा—मतलब इयैह जे कुसमी के एकटा व्यवस्था त अहाँ के करैये टा पड़त !

मानव—कथमपि नहि ! हमरा सँ किछु नहि हैत। अहाँ वैद जी सँ जे करावैक अछि, कराउ !

राजा—[हँसैत] वैद सँ कहौं ई सब काज हुयै ? हें-हें-हें-हें-हें ! जेकर जे काज छियै ! वैसी नइ— अहाँ कें बस ओकर पेट के बच्चा टा कें......

[हाथ सँ 'नोकसान' करबाक इङ्गित करैत छथि।]

मानव—हम ओसब अवैध काज ने करैत छी, ने करब !

राजा—अहाँ भेलौं शास्त्रज्ञ लोग... शास्त्रो मे विधान छै जे हजारोटा पाप कैयो कें जौं देह पर तनिटा गंगा जल छींट ली, त सबटा पाप धुयाय जाइ छै ! अहूँ छींट लेब तनिटा गंगा जल ! और एहि साधारण काम के लेल अहाँ के जत्ते टाका चाही, ततबे भेंटि जायत !

मानव—अहाँ हमरा लोभ देखाय रहल छी ? हम कुत्ता नहि, मानव थिकहुँ सेठ ! अहाँ क टाका अहीं राखू ! हम चललहुँ ! [प्रस्थानोद्यत होइत छथि।]

राजा—रुकू डाक्दर साहेब ! [मानव थम्हि जाइत छथि।] राजा सेठ आइ धरि ककरहु सँ 'नइ' नइ सुनलकै यै ! और जेकरा सँ से सुनत, तकर मुँह कें सब दिनक लेल बन्द कै देत ओ !!

मानव—[पाछाँ घुरि कए राजा क दिसि देखैत] हमरा धमकी द' कए काज करायब ? ई जानि राखू—हमर एकटा केशो कें अहाँ स्पर्श कैलहुँ त आस-पास क दसटा गाम क लोग अहाँ कें छोड़त नहि।

राजा—[उच्च स्वरें हँसैत] बड़ भरोस यै अहाँ कें जनता-जनार्दन पर, एँ ? [पुनः हँसै लगैत छथि] आपन ओ आदर्श आ' धारणा सबटा कें मैना धार मे डूबाय दियह मानव बाबू ! हम अहाँ कें सात दिन के समय देलौं सोचै लेल। नीक जेकाँ सोचि कै कहब अहाँ कें जे कहबाक यै ! नइ त अहाँ के ऊ जनता-जनार्दन कालिह भे कै अहीं कें आकाश सँ उतारि

कै पाताल मे धकेलि देत !

मानव—हमरा सोचबाक लेल समय क कोनो प्रयोजन नहि अछि । अहाँ कें जे मन हुयै से क' सकैत छी ! [मानव द्रुत प्रस्थान करैत छथि ।]

राजा—अच्छा !! त देखह आब राजा सेठ के करामति ! देखियह—आब के तोरा बचबै छह !!!

[राजा सेठ क्रूर दृष्टियें मानव क गमन पथ क दिसि देखैत रहि जाइत छथि । मंच अन्हार भ' जाइत अछि ।]

छठम दृश्य

[प्रवीण बाबू क आंगन मे मानव भोजन क' रहल छथि । सामने बुचकुन ठाढ़ अछि । पाछाँ मे करुणा बैसल छथि ।]

मानव—[अपराधी जकाँ] आइ बड़ अबेर भ' गेल ।

बुचकुन—त की भेलै ?

मानव—असल मे रोगी देखै लागैत छी त होसे नहि रहैत अछि । ताहि पर बराही सँ बजाहटि आयल छल, तैं... । [चुप रहि कए] हमरा लेल तों सब......

बुचकुन—आब अहाँ कोनो बाहर के लोग छी थोड़बे ? घर के लोग के लेल लोग कष्ट त करबे करतै । [थारी दिसि देखैत] तरकारी लाउ तनी टा ?

मानव—नहि-नहि ! हमरा आर किछु नहि चाही ।

बुचकुन—हे ! नहि-नहि करब त नहिये देब । कोनो पाहुन छी नइ जे जबर-दस्ती खिलायब । [मानव एहि बात पर हँसि देत छथि ।] तनी टा दालि-तरकारी नेने आबै छी हम...

मानव—[हँसैत] की बात थिकैक ? तखनि सँ तों हमरा बेसी-बेसी दालि-

तरकारी खुऐबाक चेष्टा क' रहल छह्— से कियैक ? बेसी भ' गेलह की ?

बुचकुन—सत्ते बेसी भै गेलै। आइ तीन दिन सै—

करुणा—बुचकुन !

बुचकुन—हमरा कियै डाँटि रहल छी दुलहिन जी ? हम्मे कि कोनो झूठ बोलि रहल छी ?

मानव—[खायब बन्द करैत बुचकुन सँ] की बात थिकैक ?

करुणा—कुछ नइ। बुचकुन ! हिनका और एक गो रोटी आनि दहुन !!

मानव—हमरा आब रोटी नहि चाही। की बात थिकैक बुचकुन ?

बुचकुन—[किछु काल सब गोटे चुप रहैत छथि। तत्पश्चात्] आइ तीन-दिन सै दालि-तरकारी फेंकल जाय रहल छै।

मानव—फेंकल जाय रहल छैक ? कियैक फेंकि रहल छहक ?

बुचकुन—मालिक कै त जानते छियै—बीमारी के बाद सै खैनाइ-पीनाइ एक दम कम भै गेल छैन। आ इने दुलहिनो जी...

करुणा—बुचकुन !

बुचकुन—[करुणा क डाँटब क उपेक्षा करैत] आइ तीन-चारि दिन सै दुलहिन जी... नइ खाय रहल छथिन।

मानव—[घुरि कए एक बेरि करुणा क दिसि देखि कए] नहि खा रहल छथि ? तकर माने ?

बुचकुन—सत्ते कहै छी। कहै छथिन—भूख नइ यै। ई कहौं हुवै ? भूख कहौं नइ लागै, जे आदमी तीन-तीन दिन सै... ! कहलियैन— डागदर बाबू त छथिने— देखाय ने लथुन, त...

करुणा—की बेकारे... ?

बुचकुन—देखलियै ने ? जत्ते बेर ई सब कहै छियैन, अहिना डाँटि कै मुँह बन्द कै दै छथिन। लेकिन आइ हम हिनकर नइ सुनबैन ! डागदर बाबू !! अहाँ हिनका एक बेरि देखियौन ने ! ई त अपना मुँहे कुछ नइ कहथिन—

करुणा—कियै ? हमरा से की भेलै जे हम हिनका कहतिहैन ? हमरा कुछ नइ

भेल छै... [ई कहैत करुणा अपनहि उठि कए भनसा घर क दिसि बढ़ै लागैत छथि कि अधे दूर जा कए खसि पड़ैत छथि ।]

बुचकुन—[करुणा कें खसैत देखि दौड़ि कए हुनका पास जा कए] हे-हे !! की भेलै ?

मानव—[शीघ्रता सँ हाथ धो कए करुणा क पास जाइत छथि] की भेल ?

करुणा—[उठबाक चेष्टा करैत छथि] कुछ नइ ! अहिना घुमरी लागि गेल रहै !! [मुदा उठि नहि होइत छन्हि, तैं बैसि रहैत छथि ।]

मानव—[करुणा क परीक्षा करैत] बुचकुन ! ई ओना नहि मानथिन्ह ! हिनका बहुत बोखार छन्हि । एकटा खटिया नेने आबह एत्तहि !

बुचकुन—हे इयैह, आनलौं ! [प्रस्थान ।]

करुणा—हमरा कुछ नइ...

मानव—[डाँटैत] अहाँ चुप रहू ! अहाँ कें की भेल अछि, से देखब हमर काज थिक ! आश्चर्य !! एहन शरीर मे अहाँ... [तावत् बुचकुन एकटा खटिया आनि कए मंच क पश्च-मध्य स्थान मे राखैत अछि । मानव आ' बुचकुन क सहायता सँ करुणा खटिया पर जा कए लेटि जाइत छथि । मानव हुनक आँखि, जीहे आदि क परीक्षा करैत छथि ।] ...बोखार त बहुत बेसी लागैत अछि । कत्तेक दिन सँ एहन अस्वस्थ छथि ?

बुचकुन—हम नइ जानै छी डागदर बाबू ! दुलहिने जी सै पूछियौन ने !

मानव—[करुणा सँ, कनेक द्विधाग्रस्त भए] अ-अहाँ कहिया सँ... माने... ई बोखार कत्तेक दिन सँ चलि रहल अछि ?

करुणा—इने तीन-चारि दिन सै बोखार बेसी भै रहलै यै...... नइ त पहिने से नइ होइ रहै ।

मानव—पहिने की होइत छल ?

करुणा—और कुछ नइ... कखनौ-कखनौ घुमरी लागि जाय रहै आ' कनी देर लेल एक दम बेहोस जेकाँ—

मानव—आ' ई बात अहाँ आइ धरि नुका कए रखलहुँ । बुचकुन !

बुचकुन—जी, सरकार !

मानव—दुआरि पर सँ मालिक कें बजा अनहुन त ! ओ अपनहि देखि जाथु जे...

करुणा—[उठबाक चेष्टा करैत घोघ तानैत] नइ-नइ, बाबू जी कैं कियै... ?

मानव—ठीके ! हमहूँ केहन बुद्धू छी ! [सोचैत] अही सब सँ त एहि देश क नारी क ई हाल होइत छन्हि। ने ससुरे सँ आपन असुविधा दय बाजब, ने खबास सँ। और हम त भेलहुँ बाहर क लोग, रास्ता क बटोही—हमरा सँ क्यो कथी लेल...

करुणा—हम सब पहिनहि सँ अहाँ के बहुत आभारी छी। बाबू जी के बीमारीओ के समय मे अहाँ बहुत खटने रहियै। तैं...

मानव—तैं ओही सेवा क कर्ज उतारैक लेल अपन जान देबा लेल तैयार भेल छी, सैह ने ? अहाँ जानैत छी जे अहाँ ककरहु किछु नहि बता कए जे भूल कैलहुँ, ताहि लेल अहाँ क जिनगी क खतरा अछि ?

करुणा—मुर्दा की मृत्यु सैं डरतै ? हम्मे मरै लेल तैयार छी।

मानव—किन्तु हम सब अहाँ कें मरै कियैक देब ?

बुचकुन—[कनमुँह भए] हँ दुलहिन जी ! हम सब अहाँ कें केना छोड़ि सकै छी ?

[मंच धीरे-धीरे अन्हार भ' जाइत अछि।]

सातम दृश्य

[प्रवीण बाबू क दुआरि। प्रवीण आ' मानव बैसल छथि।]

मानव—आइ सात दिन भ' गेल अछि; मुदा जे दवा आ' इन्जेक्शन मंगाबै लेल अस्पताल वाला सब कें कहने छलियन्हि, से नहि आयल अछि।

प्रवीण—अइठाम के अस्पताल… ई सब काज करै चाहै छै थोड़बे ? ईहो जे चारि दिन मे खून के रिपोट दै देलकै, सैह बहुत बुझह ! त, की लिखलकै खून के जाँच कै कै।

मानव—जे लिखलकै, हमरा ताहि पर सन्देह भ' रहल अछि। [स्वगत] नहि ! ई भ' नहि सकैत अछि। ई असम्भव थिक !

प्रवीण—त आब की करबहो ?

मानव—हम त खून पठा देने छियन्हि बड़को अस्पताल मे। आब आइ-कालिह मे ओत्तहु सँ रिपोर्ट भेंटि जायत। जा धरि से नहि आबैत छन्हि, ता धरि हिनकर इलाज ठीक जकाँ नहि भ' सकैत छन्हि।

प्रवीण—बड़का अस्पताल जैबाक विषय मे पुछलहुन दुलहिन जी सै ?

मानव—हुनका त हम कैक बेर कहलियन्हि जे ओतय चलू, अस्पताल मे भर्त्ती क' दैत छी। नहि त एतय नीक जकाँ इलाज नहि भ' सकैत अछि। एतय ने दवा भटैत अछि, ने आने कोनो सुविधा अछि जे…।

प्रवीण—त ऊ की कहै छथिन ?

मानव—ओ त बस एके बात क रट लगौने छथि— नहि-जायब, नहि-जायब ! बेर बेर कहैत छथि जे मरब त एत्तहि मरब— शहर मे जा कए कियैक मरब ? अहीं कहू— क्यो जँ सदिखन मरबे क चिन्ता करैत रहै त ओ… [कहि कए चुप भ' जाइत छथि।]

प्रवीण—के समझाबै ? जनानी जातिए ने तेहन होइ छै जे कुछ सुनै नइ चाहै छै। आब बुझह ! एत्ते दिन से ऊ एहेन अस्वस्थ छथिन आ ककरो पते नइ रहै। ई त भाग्य क गप छिऐन जे ओइ दिन तोहर सामनहि बेहोस भेलखिन।

बुचकुन—[प्रविष्ट भए प्रवीण बाबू क छड़ी हाथ मे उठा कए हुनक पास आबैत] चलू मालिक !

मानव—की बात थिक ?

बुचकुन—मालिक कहलखिन— भगवती थान जेथिन, तँ…

प्रवीण—चलें रौ ! पकड़ें हमरा !

मानव—हँ, जाउ ! और भगवती सँ प्रार्थना करियन्हु जे हिनका नीक क' देथिन्ह ! जखन दुनिया मे शैतान सँ शैतानो लोग नीक जकाँ जीवित अछि, तखन हिनके पर ओ एहन कोप कियैक देखा रहल छथि ? [किछु बिना बजनहि प्रवीण छड़ी हाथ मे नेने, दोसर हाथ सँ बुचकुन कें धैने निष्क्रान्त होइत छथि। मानव एसगर मे पदचारणा करै लगैत छथि। राजा सेठ प्रविष्ट होइत छथि।]

मानव—[राजा सेठ कें देखि कए आश्चर्य-चकित भए] राजा सेठ ? की बात थिक ?

राजा—अहाँ सें एकटा काज रहै।

मानव—हमरा सँ आब कोन काज रहि सकैत अछि ? हम त पहिनहि कहि देलहुँ जे हम अहाँ क कोनो काज...

राजा—[हँसैत] एत्ते जल्दी केना सम्बन्ध टूटि सकै छै डागदर साहेब ?

मानव—जोड़ै मे भनहि समय लागै, तोड़ै मे देर नहि लगैत छैक।

राजा—एत्ते दिन हमर नोन खैलौं; एत्ते जल्दी कहीं ताहि मे अरुचि भै सकै यै ?

मानव—एहि दुनिया मे सब भ' सकैत अछि राजा सेठ। जखन हजार अपमान क बादो अहाँ कें हमरा सँ काज लेबाक इच्छा भ' सकैत अछि, तखन और की असम्भव होयत ?

राजा—[हँसैत] जखैन अइ दुनिया मे सब भैये सकै यै, तखैन हमर ई काज अहूँ कें करै टा पड़त।

मानव—अहाँ हुकुम क' रहल छी ?

राजा—हुकुम बुझू हुकुम, नइ त अनुरोध ! अखैन एतबे धरि कहि सकैं छी जे ई काज कैने पहिने सैं बेसी नोन भेंटत, बहुत बेसी ! आ टाका दै के मामला मे राजा सेठ कहियो पछुआयल नइ रहि सकै यै ! से त जानते छियै......

मानव—हमरा एखनहु पाइ क लोभ देखा रहल छी ? [हँसैत, स्वगत]

ओना और अहाँ के छैहे की जे लुटा सकैत छी ? [प्रकाश्य] काज की थिक ? फेरो कोनो विधवा युवती क बच्चा नोकसान करैबाक ?

राजा—नइ-नइ ! बड़ साधारण काज छिकै। अहाँ कें दू-चारि लाइन लिखि दियै पड़त— बस !

मानव—लिखै पड़त ? की लिखै पड़त ?

राजा—अहाँ कागज-कलम निकालू ने... हम कहने जाइ छी।

मानव—अहाँ हमरा सँ की लिखावै चाहैत छी— पहिने से कहू।

राजा—एकटा लड़की... वैह कुसमिये... आ-हा-हा, बेचारी...

मानव—[उत्तेजित भए] की भेल अछि कुसुम कें ? की कैलहुँ अहाँ ?

राजा—हम की करब ! जे भेल, तै सै हमरा बेहद दुःख भै रहल यै।

मानव—[व्यंग्य करैत] कुम्भीराश्रु !

राजा—की कहलौं ?

मानव—किछु नहि।

राजा—हमरा त, जानते छियै, आरम्भहि से इच्छा नइ रहै जे ऊ बैदवा ओकर इलाज करै... तैं हम अहाँ सै...

मानव—जखन ओ इलाज कैये रहल छथि, तखन हमरा कियैक बजावै आयल छी ? हम त अहाँ सँ कहिये देने छलहुँ जे...

राजा—जे अहाँ ओकर इलाज नइ करबै ! तैं त ई हाल भेलै यै ओकर। [मानव किछु नहि कहैत छथि। राजा किछु काल चुप रहि कए मानव क दिसि देखैत कहैत छथि] बेचारी ! कालिह बेरियेखुना ओकर तबियत खराब भै गेल रहै। राति हैत हैत ओ मरिये गेलै...

मानव—की ? कुसमी मरि गेल अछि ? [क्षोभ सँ गुम भ' जाइत छथि।] तकर अर्थ— अहाँ सब मिलि कए ओकर खून कैलहुँ अछि...

राजा—[हँसैत] ई की कहि रहल छी, डागदर साहेब ? ओकर चिकित्सा मे जे जे चीज के जरूरत भेलै, से सबटा हम...

मानव—ओह ! हम सोचियो नहि सकैत छलहुँ जे मात्र आपन शरीर क

सुख क लेल अहाँ दोसर मनुष्य क जानो...

राजा—[हँसैत] नइ-नइ ! हम ओकर जान केना लै सकै छी ? और सेहँ त अहाँ लिखि देबै... अहाँ लिखबै जे ओकर मृत्यु स्वाभाविक रूप सै भेल छै और......

मानव—नहि !

राजा—और अहीं ओकर इलाज करै रही !

मानव—ई कथमपि नहि भ' सकैत अछि। हम ने ओकर इलाज कैने छी—ने हम एहन झूठमूठ क प्रमाण-पत्र द' सकैत छी !

राजा—जानते छी— वैद्बाक कोनो डिग्री-तिग्री छै नहियें... ओ त ओहिना अपन बाप सै जे दू-चारिटा दवाय के नाम सिखलक यै, सैह लै कै...... तैं अहीं कै प्रमाण-पत्र दियै पड़त—

मानव—[चीत्कार करैत] असम्भव ! अहाँ सब खूनी छी, खूनी !

राजा—[धीर स्वरें] आह ! आस्ते बोलू... नइ त—

मानव—आस्ते कियैक ? हम त दसो गाम में चिकरि-चिकरि कए कहब जे अहाँ और ओ वैद्य मिलि कए कुसमी क खून कैने छियैक। सैह नहि, हम पुलिसो कें......

राजा—[क्रुद्ध भए] डाक्टर ! सावधान !! अहाँ आगि लै कै खेल रहल छी ! ई बात जौं और ककरहु कान मे पहुँचै त हमरा बाध्य भै कै और एकटा खून करावै पड़त।

मानव—निकलि जाउ ! अहाँ निकलि जाउ एतय सँ !!

राजा—[हँसैत] मकान ककरो, आ निकालि रहल छै और कोइ... हुँः ! कादो मे पड़ला सै कुत्तो हाथी कें लाति मारबाक कोसिस करै छै। लेकिन, ई अहाँ नीक जकाँ जानि राखू जे अहाँ के टांग हम तोड़ि देब ! राजा सेठ पापी आदमी और मानव डाक्टर पुण्यात्मा !! अहाँ की बुझै छी अहाँ के बात नुकायल यै ? आब लोगो कें पता चलि जैतै जे अहाँ के असली रूप की छिकै ! तखैन देखब— ई तेज कत्ते रहै छै !

[एतबा कहि कए क्रुद्ध राजा सेठ निष्क्रान्त होइत छथि। मानव ओहि दिसि देखतहि रहि जाइत छथि। हुनको आँखि मे क्रोध क चिह्न स्पष्ट प्रतीत होइत छन्हि। मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

आठम दृश्य

[प्रवीण बाबू क आंगन मे एकटा खटिया पर बिछौना ओछाओल अछि। ओहि पर करुणा सूतल आकाश क दिसि देखि रहल छथि। मानव ओसरा क टेबुल क पास जा कए दवा तैयार करैत छथि। एकटा लाल-टेन बरैत अछि खटिया क पास। मध्य रात्रि।]

करुणा—मानव बाबू!

मानव—[अपन काज करैत-करैत] कहू!

करुणा—अहाँ राति मे कहियो ऊपर अकास दिस देखलियै ये ?

मानव—नहि! नीक जकाँ नहि देखलहुँ कहियो। कियैक ? [कहैत कहैत दवा ल' कए करुणा क पास अबैत छथि।] हे ई पीबि लियह, त दोसर बात करब।

करुणा—[उठि कए दवा पीबैत छथि।] ई बड्ड कड़गड़ दवाय छिकै!

मानव—[उठि कए गिलास कें टेबुल पर धरैत] रोग जत्तेक कड़गर होइत छैक, दवो ततबहि... जाय दियह! की ने कहैत छलहुँ अहाँ ? ओ हँ... आकाश क गप्प!

करुणा—[बैसल रहैत छथि। हुनक बैसबाक सुविधा क लेल मानव और एकटा तकिया हुनक पाछाँ मे राखि दैत छथि।] हम कहै रहियै अकास दय।

मानव—की कहैत छलहुँ ?

करुणा—हमहूँ कहियो नइ देखने रहियै नीक जकाँ अकास दिस। घर क काज मे एत्ते ने बाझल रहै रहियै जे... । तैं अइ तीन चारि दिन सै खूब नीक

जकाँ देखि रहल छियै। तकर पहिने त अहाँ अइ रोगिओ कै घरे मे बन्द राखै रहियै... कियै से राखै रहियै ?

मानव—से जाय दियह ! कहू, की देखलहुँ आकाश मे ?

करुणा—हजार-हजार तारा जेना भरि-भरि राति जागि कै हमरा पहरा दै रहल यै। हमरा मरै नइ देत ऊ सब।

मानव—तैं त एम्हर अहाँ क आंगन मे सुतबाक अर्जी मंजूर कैलहुँ अछि।

करुणा—झूठ !

मानव—कियैक ?

करुणा—हम बूझै छी अहाँ कियै हमरा एत्ते दिन घर मे बन्द राखै रहियै आ एखैन कियै......

मानव—कियैक ? कहू त—

करुणा—[मुँह कें आन दिसि फेरैत] हम जानै छी— आब हम जे कुछ करै चाहब, अहाँ सब मंजूर करब। कारण...

मानव—कारण ?

करुणा—आब भरिसक हमर बचबाक उमेद नइ छै।

मानव—[कुर्सी सँ उठि जाइत छथि।] की बेकार क बात सबटा कहि रहल छी ? ई सब के कहलक अहाँ सँ ? एँ ?

करुणा—कहत के ? दिनोदिन हमर चेहरा जेहन भेल जाइ यै—से हम अपनहि बूझि नइ रहल छी की ?

मानव—हूँ ! अहाँ त आधा-डाक्टर भैये गेल छी ! [पदचारणा करैत] सेह जौं अहाँ क मन मे अछि, त कालिह सँ अहा फेरो घर क भीतरे सूतब !

करुणा—नइ नइ !

मानव—नहि कियैक ?

करुणा—हमरा घर मे दम घुटै लागै छै ! एत्ते जेहन शान्ति मिलै यै, ओत्ते से कखनहु नइ मिलल रहै। एत्ते मरबो करब त शान्ति सै मरब।

मानव—[डाँटैत] फेर मरबाक गप क' रहल छी ?

करुणा—अच्छा ! आब नइ कहब ! [किछु काल दुनू चुप रहि जाइत छथि।]

हमरा लेल अहूँ कै कत्ते तकलीफ करै पड़ि रहल यै ?

मानव—हूँ ! बड़ तकलीफ भ' रहल अछि। जत्तेक अहाँ कें भीतर-भीतर भ' रहल अछि, भरिसक ताहू सँ बेसिए !

करुणा—से हम नइ कहलौं। आइ कालिह त अहाँ आन आन गाम जाय कें रोगी देखब बन्दे कै देलियै। दिन मे बस दुआरिये पर जे आबै यै, तकरे देख कै छोड़ि दै छी।

मानव—त की करू, और और लोग कें मामूली कफ-पित्त-बोखारे होइत छैक, अहाँ जकाँ...... [कहैत कहैत चुप भ' जाइत छथि अपन गलती कें बुझि कए।]

करुणा—हमरा जेकाँ ? हमरा जेकाँ की ?

मानव—किछु नहि।

करुणा—अहाँ ककरो नइ कहै छी, हमरा की भेल यै। डरै छी—जौं कोइ हमरा से कहि दै; सैह ने ? [मानव एहि बात पर किछु नहि कहैत छथि।] कालिह दुपहर खुन परसौनीवाली दादी आयल रहथिन। ऊ हो पूछै रहथिन रोग दय। हम नामे नइ बताय सकलियैन !

मानव—रोग क नाम जानि कए अहाँ करबे की करब ?

करुणा—कम से कम ई त बूझि सकब जे और कत्ते दिन बाकी छै... और कत्ते दिन अहाँ कै कष्ट......

मानव—हमर कोन कष्ट अहाँ देखलहुँ, जे बेर-बेर से कहि रहल छी ?

करुणा—[उदास भए] नइ जानि बाबू जी आ अहाँ की-केना खाय हैब।

मानव—हम सब नीके वस्तु खाइत छी आ' खूब खाइत छी। बुचकुन कें अहाँ भरिसक किछु नहि बुझैत छी। मुदा असल मे ओकरा खूब बढ़िया भानस करै आबैत छैक। ताहि मे ओ अहाँ सँ कम नहि अछि।

करुणा—[एतबा सुनितहि दुनू हाथ सँ मुँह झापि कए कानै लागैत छथि। मानव की करताह से हुनका नहि फुरैत छन्हि। अपना कें कनेक सम्हारि कए करुणा कहैत छथि—] नीके भेल ! हमरा चलि जाय के बाद अहाँ सब कै कोनो तरहक तकलीफ नइ हैत। हमहीं बेकारे एत्ते सोचै रहियै।

[कहैत-कहैत फेरो कानै लागैत छथि। मानव आपन कुर्सी कें हुनक खटिया क पास आनि कए ताहि पर बैसैत छथि। हुनका चुप करैबाक लेल हुनक देह कें स्पर्श करताह कि नहि, से सोचि कए द्विधाग्रस्त भए बैसले रहैत छथि। कनैत-कनैत करुणा कहैत छथि—] लेकिन आब हमरा मरै के मोन नइ करै यै! [कहैत - कहैत उठि कए कनेक अगुआ जाइत छथि। मानवो उठि कए हुनक पाछाँ कनेक दूर मे ठाढ़ भ' जाइत छथि।] आब... आब फेरो हम... हम बचै चाहै छी! हमरा बचा लियह! हमरा बचा लियह!! [एतबा कहैत-कहैत करुणा बड़ दुर्बल भ' जाइत छथि। रोग क आक्रमण सँ हुनक मुँह फकसिया भ' जाइत छन्हि आ ओ थरथर काँपै लगैत छथि एवं पसीना-पसीना भ' जाइत छथि। पाछाँ मे ठाढ़ मानव कें एहि हालत क पता नहि लगैत छन्हि। मुदा किछु काल धरि करुणा कें किछु बजैत नहि देखि ओ कनेक अगुआ कए करुणा कें की भेल छन्हि, से देखै चाहैत छथि। तावत् करुणा मूर्च्छित-प्राय भ' जाइत छथि।]

मानव—[झपटि कए करुणा कें पकड़ि कए] ई की? की भेल अछि अहाँ कें? करुणा! करुणा!! [मानव क छाती पर माथ राखि कए धीरे-धीरे करुणा स्वाभाविक भ' जाइत छथि आ माथ उठा कए मानव क उद्विग्न मुँह क दिसि देखैत छथि।] करुणा! एखन कनेक स्वस्थ छी ने?

करुणा—हमरा एखैन कोनो रोग छूबियो नइ सकै छै! हम त एखैन मानव क पास छी।

मानव—[ई बात सुनि कए करुणा कें आपन छाती पर सँ हँटाबैत] अ-अहाँ एखन विश्राम करू करुणा!

करुणा—नइ! हमरा कहै दियह! एकर बाद धीरे-धीरे भरिसक हमर कण्ठो रुद्ध भै जायत... कुछ कहि नइ हैत हमरा सें! आब मात्र अहाँ के लेल जीयै के मोन कै रहल यै हमरा। हमरा लेल जेना दिन-राति अहाँ मृत्यु सैं लड़ि रहल छी—

मानव—से हम और कोनो रोगी क लेल करितहुँ। हमहीं अस्वस्थ रहितहुँ त अहाँ से नहि करितहुँ ?

करुणा—[मानव क बात क उपेक्षा करैत] बियाह क दू मासक बादे हमर सिन्दूर मेटा गेल। आइ तकर आठ-नौ साल भै गेल यै ! ई आठ-नौ साल सँ हम प्रति पल, प्रत्येक मुहूर्त्त मृत्यु क लेल प्रार्थना कैने छी। और आइ जखैन मृत्यु हमर माथ लग ठाढ़ छै, तखैन...। हम... अहाँ सँ...

मानव—[करुणा क बात सुनैत-सुनैत खटिया पर सँ ओढ़बाक चादर उठा कए हुनका दिसि बढ़ैत छथि।] आह, आह ! कियैक अहाँ तखनि सँ बजैत जा रहल छी ? जत्तेक हम अहाँ कें कम बाजै कहैत छी, अहाँ ततबे बेसी-बेसी......

करुणा—नइ हमरा कहै दियह !!

मानव—नहि ! किछु कहबाक प्रयोजन नहि अछि एखन। [करुणा कें नीक जकाँ चादर ओढ़ा कए] चलू ! विश्राम करू एखन ! से नहि करब त नीक हैब कोना ?

करुणा—[मानव क हाथ पकड़ैत] सत्ते कहै छी ? हम फेरो नीक हैब ? फेरो पहिनुके जेकाँ...... ? [माथ झुका कए] नइ, से कतौ भेलै यै ?

मानव—हम कहैत छी— अहाँ नीक भ' जायब। फेरो, पहिनुके जकाँ भ' जायब। अहाँ हमर बात पर विश्वास करू !

करुणा—[अविश्वास क दृष्टियें मानव क दिसि देखैत] अहाँ हमर एकटा बात राखब ?

मानव—कहू !

करुणा—अहाँ कहियो अइ गाम कें... चिरागबस्ती कें छोड़ि कए नइ जायब; हम रही वा नइ रही ! अहाँ के चलि गेने चिरागबस्ती अन्हार भै जायत...

मानव—अहाँ रहब कियैक नहि ? अहूँ रहब ! हमहूँ रहब ! सब कियो रहत !

करुणा—सत्ते ? [माथ डोला कए करुणा कें सुता देबाक लेल हुनका पकड़ैत मानव खटिया क दिसि बढ़ैत छथि। मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

नवम दृश्य

[प्रवीण बाबू क दुआरि। प्रवीण एसकरे बैसल हुक्का पीबि रहल छथि।]

प्रवीण—[हुक्का पीबैत-पीबैत] बुचकुन ! बुचकुन रौ !!

बुचकुन—[नेपथ्य सँ] ऐलौं मालिक ! [प्रविष्ट भए] की कहै छी ?

प्रवीण—एखैन दुलहिन जी केहन छथिन ? [बुचकुन कें किछु नहि बजैत देखि] की भेलौ ? कहै किये नइ छै कुछ ?

बुचकुन—की कहू मालिक ?

प्रवीण—तों सब हमरा ठीक-ठीक नइ कहै छै ! जखनै पूछै छियौ त कहै छें—आब कनीटा नीक छथिन पहिने सँ। सैह जौं हुवै त आइ धरि ठीक किये नइ भेलखिन ? [चुप रहि कए] पहिले-पहिने त मानवो सँ बातचीत है रहै ! एम्हर दुइ सप्ताह सँ ऊहो दिन राति एक कै कै हुनके सेवा में लागल छै। दोसर-दोसर मरीज सब आबि आबि कै घुरि जाय छै। और तोरा पूछै छियौ त कहै छें... । बुझै छें जे मालिक आन्हर छथिन; की बुझथिन ! हम सबटा बुझै छियौ !

बुचकुन—[कनैत] ह-हम कुछ नइ जानै छी, मालिक ! हमरा सै नइ पुछू !!

प्रवीण—[बुचकुन कें किछु देर धरि कानै दैत छथि आ' तकर बाद पूछैत छथि] एँ रौ बुचकुन ? हुनकर की आब बचबाक कोनो उमेद नइ ? [बुचकुन कनैत कनैत नकारात्मक भंगिमा में माथ डोलबैत अछि, प्रवीण आन्हर छथि से बिसरि कए। बुचकुन सँ कोनो मौखिक उत्तर नहि पाबि कए प्रवीण कहैत छथि—] एकटा काज करबें ? कनियें देर के लेल मानव कें हमरा पास भेज देबें ? [बिना कोनो जबाब देने बुचकुन प्रस्थित होइत अछि। किछु कालक पश्चात् मानव प्रविष्ट होइत छथि। हुनको शरीर पर रात्रि-जागरण और परिश्रम क चेन्ह स्पष्ट छन्हि—जे आन्हर प्रवीण नहि देखि सकैत छथि; मुदा, दर्शक बुझि सकैत छथि।]

मानव—हमरा बजौने छी ?

प्रवीण—हूँ ! तोरा सँ एकटा बात पूछै चाहै छी। [चुप रहि कए] तों सब हमरा सँ सब कुछ नुकौने जाय रहल छहो; से कियैक ? हमर उमर क डरें ? भरिसक डरैं छहो जे असल बात सुनने जौं हमहूँ अस्वस्थ भै जाइ ! [दुःख सँ हँसैत] नइ ! से नइ हैत। जे आपन जवान बेटा के मृत्यु कें सहलक यै, तकरा आब कुछ नइ भै सकै छै !

मानव—अहाँ शान्त होउ !

प्रवीण—कोना शान्त हैब ? हमर परिवार क अन्तिम दीया मिझा रहल यै आ हम... [ई कहैत कानै लगैत छथि। मानव हुनक पीठ पर हाथ राखि कए हुनका शान्त करबाक चेष्टा करैत छथि।]

मानव—के कहैत अछि अहाँ क परिवार क दीया मिझा गेल अछि ?

प्रवीण—[आँखि क नोर पोछैत] तों आबहु हमरा सान्त्वना नइ दै मानव ! काल्हि भै कै हम त जैबे करब। बाकी रहथिन दुलहिन जी। से हो...... [वाणी रुद्ध भ' जाइत छन्हि। किछु कालक बाद।] ओहि बेचारी कें अइ परिवार मे आबि कै कुछ नइ मिलल्है ! हमर बेटा क मरै के बाद ऊ अइ आठ-नौ साल सँ हमरे देख-भाल के लेल आपन भाइ-बहिन लग नइ गेल। बुचकुन द्वारा कत्ते कहबैलियैक, लेकिन ऊ सुनै बाला नइ। आइ हमरा ई सजा दै के लेल ऊ एत्तेक दिन सँ...... [कहैत-कहैत पुनः कानै लगैत छथि।]

मानव—अहाँ एना कियैक क' रहल छी ? सब कें जाय दियौक... हम त छी ! हमरा अहाँ जनम नहि देलहुँ, तें कि हम अहाँ क क्यो नहि ?

प्रवीण—[मानव क हाथ पकड़ि कए] नइ-नइ ! से कियै ?

मानव—अहाँ क एक बेटा अहाँ कें छोड़ि कए चलि गेल अछि। मानि लियह, हम अहाँ क दोसर बेटा थिकहुँ !

प्रवीण—[कनैत] कह' मानव ! ई बात हजार बेर कह' !! सत्ते त ! हम तोरा दय बिसरिये गेल रहियह ! आब... आब हमरा कोनो चिन्ता नइ...हमर

बेटा हमरा मिलि गेल। लेकिन पहिने तों प्रतिज्ञा करह जे हमरा छोड़ि कै, अइ चिरागबस्ती के छोड़ि कै कत्तौ नइ जैबह।

मानव—हम एत्तहि छी! हम... हम कत्तहु नहि जायब! आब अहाँ विश्राम करू! हम ओम्हर हुनका कनेक देखैत छियन्हि......

प्रवीण—[ई कहि कए धीरे-धीरे प्रवीण क हाथ छोड़ा कए मानव आंगन दिसि चलि जाइत छथि। प्रवीण आनन्दाप्लुत भए बैसल रहैत छथि; आँखि सँ नोर बहैत छन्हि।] हमर बेटा हमरा मिल गेल... आब हमरा कोनो चिन्ता नइ... कोनो चिन्ता नइ! [तावत् बाहर सँ पाँच-दस गोटेक कंठ स्वर— कोलाहल सुनल जाइत अछि। प्रवीण आश्चर्य-चकित भ' जाइत छथि। कोलाहल क स्वर धीरे-धीरे पास आबि जाइत अछि। राजा सेठ, नारद, मारीच, दुनू गौंआ आ' अन्यान्य किछु व्यक्ति प्रविष्ट होइत छथि।]

राजा—हे इयेंह! इयेंह त बैसल छथि।

नारद—हिनके सें पुछहो ने सबटा बात!

मारीच—परबीन भाइ!

प्रवीण—के सब छहो? लागै छै, बहुत गोटे छै।

नारद—हँ, छी त हम सब बहुत गोटे। राजा सेठ, हम, वैद और आरो पाँच-सात गोटे।

प्रवीण—त ठाढ़ किये छहो? बैठैं जाहो ने।

मारीच—हम सब एत्तै बैठै लेल नइ आयल छी।

प्रवीण—तब कथी लेल आयल छहो?

राजा—हमरा सब कै एकटा बात के कैफियत चाही!

प्रवीण—कैफियत? कथी के कैफियत?

राजा—ओना ई बात त पूछै के विचार रहै ओइ डकटरवा सें। लेकिन जब अहीं भेंटि गेलियै ये, तखैन अहीं सें हमरा आरकै सब कुछ कहि सकै छी।

प्रवीण—हँ-हँ! कह' ने, की कहबह!

राजा—कह' हौ वैद, तोंहीं कह'!

मारीच—बेस, तखैन हमहीं कहै छी। हमरा सभक आँखि क सामने तोहर घर मे जे अनाचार भै रहलै यै...

प्रवीण—रह', रह'। की कहलै? अनाचार?

मारीच—हँ, अनाचार!

प्रवीण—के कै रहलै यै ई अनाचार हमरा घर मे?

मारीच—वैह, जाहि साँप कें दूध दै कै पोसने छहो!

प्रवीण—साफ-साफ बात करह!

मारीच—साफ कहै मे से कि डरै छी? हम ओहि डाक्टरबा दै कहि रहल छियह।

प्रवीण—आदमी भै कै आदमी के सम्मान करै सीखह, तब हमरा सै बतियैह!

नारद—हमरे कहै दहक। सुनह भाइ, तोरा हम पहिनहि मना कैने रहियह जे एहन अज्ञातकुलशील लोग कै आश्रय नइ दहो। त तों हमर बात नइ सुनलै।

प्रवीण—देखह नारद! तोहर काज छह कहै के, से कहने रहो। हमरा सुनै के इच्छा नइ भेलै, तें नइ सुनलियै। तै सै ककरा की भेल छै?

नारद—हैके आब बाकिये की छै?

राजा—अहाँ क घर मे जे भै रहल छै, से त दूर जाउक। अहाँ के पोसुवा डाक्टर हमरा सब के गाम के बहू-बेटी के संग जे कैलकै यै, से नइ पुछू!

प्रवीण—[उत्तेजित भए] की कैलकै यै?

राजा—ऊ कुसमी कें ग्रास कैने रहै। ग्रयैह त वैद जी छथिन। पुछियौन ने हुनका सै। कुसमी के इलाज करै रहै ऊ। इलाज की करतै; जे करै रहै—से सब कोइ जानै छै।

प्रवीण—तों कहै की चाहै छहो?

राजा—कहैयो मे लाज लागै छै। कुसमी कें अइ डाक्टरबा सै बच्चा होवैया रहै। वैद जी कै सन्देह भेलैन, तें एक बेर नाड़ी टेबि कै देखलखिन रहै। और ताही लाजें गला मे फाँसी लगा कै कुसमी आत्महत्या कैने छै।

प्रवीण—झूठ बात ! ई तों सब बनाय कें कहै छे मानव कें बदनाम करै लेल।

राजा—हम कोनो बात बनाय कें नइ कहै छी। हम जे कुछ कहलौं, तकर हमरा पास प्रमाण अछि।

प्रवीण—हम नइ मानै छी तोरा सभक प्रमाण कें। तों सब जे नइ से कै सकै छे।

नारद—डाक्टरे ई काज कैने छै, तै मे सन्देह नइ। लेकिन ठीक छे। तखैन डाक्टर के और और काण्ड दे सुनि लै। तब कहिहो जे कहबाक छह। कह' हौ वैद !

मारीच—डाक्टर जे तोहर आंगन मे लीला चला रहल छै, तों कहै चाहै छहो—सेहो तोरा पता नइ छह ?

प्रवीण—[उत्तेजित भ' कए ठाढ़ भ' जाइत छथि] थम्हह ! हमरा सब दै कोनो कुवाक्य मुँह सै निकाललै त...

मारीच—से तों जे मोन हुवै कै लै। छियह त तोरे दुआरि पर। लेकिन हम सब आब ई सब नइ सहबै।

नारद—परसौनी वाली अपना आँखि सै देखने छै दुनू गोटे के काण्ड।

प्रवीण—की ? की देखलकै परसौनी वाली ?

नारद—इयैह जे राति के पहर मे दुनू एक दोसरा के भरिपाँज कै पकड़ि कै...

प्रवीण—[चीत्कार क' कए] नारद !!!

नारद—हमरा पर बिगड़ला सै की हैतै ? तों लोग के मुँह कै बन्द कै सकबहो ?

प्रवीण—लोग ? के छियै लोग ? तों सब अपना कै लोग बुझै छह ? तों सब त राजा सेठ के पोसल कुत्ता छह... और राजा सेठ के शैतानी हम सब नीक जेकाँ जानै छी।

राजा—अइ अन्हरबा सै बतियौने कुछ नइ हैतै ! चलह, देखै छियै— असल मे ओहि मौगी के कोन रोग भेल छै और डाक्टर केना चलाय रहल यै आपन लीला।

प्रवीण—[आपन छड़ी खोजि कए हाथ मे लैत] खबरदार !!! हमरा जीवैत जौं कोइ हमर अङ्गिना दिस बढ़लै यै कि—

बुचकुन—[नेपथ्य सँ, चीत्कार करैत प्रविष्ट होइत अछि।] मा-लि-क !!!
मालिक ! [प्रवीण क पास आबि जाइत अछि।]

प्रवीण—[बुचकुन क दिसि घुरैत] की भेलौ ? की भेलौ— कह, बुचकुन !!!

बुचकुन—[हकन्न कए कानैत] मालिक ! दुलहिन जी... दुलहिन जी आब नइ... [कानै लगैत अछि।]

प्रवीण—[हाथ सँ छड़ी खसि पड़ैत छन्हि और आँखि सँ नोर चुवै लगैत छन्हि] की सत्ते सब शेष भै गेलै ?

मानव—[प्रविष्ट भए] हँ ! सब शेष भ' गेल अछि। [मानव क पाछाँ-पाछाँ मूड़ी खसौने कौशल्या मंच पर आबैत छथि।]

पहिल गौंआ—[सहानुभूतिक स्वर मे] की भेल छलैन हुनका ?

राजा—[व्यंग्यात्मक स्वर मे] सैह पूछै त आयल छी हम सब। की केलौं हुनका जे......

मारीच—हुनके कियैक ? पुछू— कुसमी कें केना मारलखिन ?

कौशल्या—[कुसमी क नाम सुनितहि चौंकि उठैत छथि आ' माथ पर सँ घोघ खसि पड़ैत छन्हि—] खबरदार ! जौं तों आपन पापी मुँह सँ हमर बेटी क नाम लेलै त हम... ! इयैहे ओकरा मारलक ये ओकर पेट काटि कै......

राजा—की बक-बक करै छह ?

कौशल्या—कोन मुँहें एखनो आयल छहो दोसर के घर के छेद खोजै लेल ? तों की बुझै छहो आब ककरहु तोरा चिन्है मे कसर रहि गेल छै ? जौं से रहबो करै त आइ हम सौंसे गाम मे ढोलहा पिटबाय कै कहबाय देबै सबटा बात।

राजा—की कहबाय देब हो ?

कौशल्या—तोंही हमर बेटा सै झगड़ा करबाय कै ओकरा अलग करबौने रहो। तोंही ओकर इज्जति लूटि कए ओकरा......

राजा—[गरजैत] थम्ह' !!

मानव—[ताहू सँ बेसी गरजि कए] राजा सेठ !!! तोरा कनियोंटा लाज नहि होइत छह जे एत्तेक बड़का टा के पाप क' कए फेर हिनका पर आपन पैसा क गरमी देखा रहल छह ?

कौशल्या—[कनैत] तों बुझै छहो जे पैसा सै दरोगा - पुलिस - मजिस्टर —सब कें कीन लेबहो ? तोहर पाप क सजा त हैतह तोहर मरै के बाद, जखैन भगवान हिसाब मांगथुन, तखैन।

राज़ा—[अन्य ग्रामवासी सब सँ] ई...... ई सब सबटा झूठफूस कहि रहलै यै...... सबटा मन गढ़न्त......

मानव—और तों छह सत्यवादी युधिष्ठिर ? चमार नहितन ! निकलि जाह हमर सीमा सँ बाहर !

राजा—[जाइत-जाइत] ठीक छै ! हम जा रहल छी ! लेकिन तोरा हम छोड़बह नइ डाक्टर। अइ गाम मे तोरा हम टिकै नइ देबह। [राजा, मारीच आ' नारद झपटि कए प्रस्थान करैत छथि। अन्य सब ग्रामवासी मूड़ी खसौने ठाढ़ रहैत छथि। सब क्यो प्रस्तरीभूत भ' जाइत छथि। मंच क आलोक मद्धिम भ' जाइत अछि। दुआरि क एक कोना सँ आपन बैग उठा कए मानव आगाँ बढ़ैत छथि। मात्र हुनकहि पर स्वल्पालोक पड़ैत छन्हि। किछु दूर अगुआ कए ओ थम्हि जाइत छथि। नेपथ्य सँ एकटा स्वर सुनल जाइत अछि—]

स्वर—की मानव ? एत्तहु सँ पड़ा रहल छी ?

मानव—पड़ायब कियैक ? हम कोनो अपराध कैने छी थोड़बे ?

स्वर—तखन ? तखन कियैक पड़ा रहल छी ?

मानव—गाम क विषय मे हमरा जे धारणा छल, से सबटा टूटि गेल अछि। पहिने बुझैत छलहुँ, गाम क लोग, तकरा सभक रहन-सहन, एतहुका प्राकृतिक सौन्दर्य— सब मे एकटा पवित्रता छैक।

स्वर—मुदा आब बुझाइत अछि जे अहू ठाम क जिनगी शहर क जीवन सँ कोनो नीक नहि; सैह ने ?

मानव—हँ; धनिक क अत्याचार, मनुष्य क आदिम लोभ-लालसा और हृदयहीनता एत्तहु तहिना अछि, जेना ओतय......

स्वर—[हँसैत] ने अहाँ कें गामे पसिन अछि, ने शहर। तखन, आब जायब कतय ? [उच्च स्वर मे हँसै लागैत अछि।]

[चारूकात सँ जेना अनेक गोटे मानव सँ इयैह प्रश्न करै लगैत छथि—'आब जायब कतय ? आब जायब कतय ?']

मानव—सत्ते त, आब जायब कतय ? हमरा त और कोनो जगह......

करुणा क स्वर—[नेपथ्य सँ] अहाँ हमर एकटा बात राखब ?... अहाँ कहियो अइ गाम कें...... चिरागबस्ती कें छोड़ि कए नइ जायब; हम रही वा नइ रही ! अहाँ के चलि गेने चिरागबस्ती अन्हार भै जायत......

प्रवीण क स्वर—[नेपथ्य सँ] सत्ते त ! हम तोरा दय बिसरिये गेल रहियह ! आब हमरा कोनो चिन्ता नइ...... हमर बेटा हमरा मिलि गेल। लेकिन पहिने तों प्रतिज्ञा करह जे हमरा छोड़ि कै— अइ चिरागबस्ती के छोड़ि कै— तों कत्तहु नइ जैबह !

स्वर—मानव !

मानव—[चौंकैत] एँ ?

स्वर—की सोचि रहल छी ? घुरि जाउ ! मनुष्य मे नीक-बेजाय दुनू होइत अछि। इतिहास कहैत अछि— कोनो मनुष्य, स्थान वा वस्तु पूर्णतः अधलाह नहि भ' सकैछ।

मानव—मुदा हमर अपमान ? से कोना......

स्वर—जे आदर अहाँ कें भेंटल अछि, तकर मोल अहाँ क अपमान सँ बहुत बेसी छैक मानव बाबू।

करुणा क स्वर—[नेपथ्य सँ] आब मात्र अहाँ के लेल जीयै के मन कै रहल यै हमरा...... मात्र अहाँ के लेल...... मात्र अहाँ के लेल......

मानव—हँ ! हमरा घुरै पड़त, हम घुरब अहीं क लेल घुरब करुणा, अहीं क लेल। हम...... हम आबि रहल छी करुणा ! हम आबि रहल छी !!

[एतबा कहैत मानव पाछाँ घुरैत छथि एवं चलबाक चेष्टा करैत प्रस्तरीभूत भ' जाइत छथि। बहुत दूर-दूर मानव क चीत्कार ध्वनित-प्रतिध्वनित होइत रहैत छन्हि— 'करुणा ! करुणा !! हम आबि रहल छी !' धीरे-धीरे मंच क पर्दा खसैत अछि।]

—:o:—

लेखक परिचिति

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

भाषाविज्ञानक सान्मानिक स्वर्णपदकप्राप्त स्नातक,
कलकत्ता विश्वविद्यालयक १९७२ क ईशान स्कालर।
भाषाविज्ञानक स्नातकोत्तर अध्ययनहु मे स्वर्णपदकप्राप्त।
एखन दिल्ली विश्वविद्यालयक भाषाविज्ञान विभाग मे मैथिली क यू० जी० सी० फेलो।

एतावता प्रकाशित ग्रन्थ—
कवयो वदन्ति (१९६६, मैथिली कविता-संकलन)
अमृतस्य पुत्राः (१९७१, मैथिली कविता-संकलन)
नायकक नाम जीवन (१९७१, मैथिली नाटक)
एक छल राजा (१९७३, मैथिली नाटक)
नाटकक लेल (१९७४, मैथिली नाटक)
प्रत्यावर्त्तन (१९७६, मैथिली नाटक)

स्थायी निवास—
ग्राम—खड़मौरा, पोस्ट—शाहपुर बाजार, जिला—सहरसा।

वर्त्तमान पत्राचारक पता—
भाषाविज्ञान विभाग, आर्ट्स फैकल्टी एक्सटेन्शन,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-११०००७।